असुरक्षा पर सीधी बातचीत

परमेश्वर के वचन की सामर्थ से भावनात्मक युद्ध पर विजय प्राप्त करना!

जॉयस मेयर

पूर्व प्रकाशित शीर्षक सहायता किजिए–*मैं असुरक्षित हूँ!*

असुरक्षा

पर सीधी बातचीत

असुरक्षा

पर सीधी बातचीत

परमेश्वर के वचन की सामर्थ से
भावनात्मक युद्ध पर विजय प्राप्त करना!

जॉयस
मेयर

JOYCE MEYER
MINISTRIES®
Nanakramguda, Hyderabad - 500 008

Unless otherwise indicated, all Scripture quotations are taken from *The Amplified Bible* (AMP). *The Amplified Bible, Old Testament,* copyright© 1965, 1987 by The Zondervan Corporation. *The Amplified New Testament,* copyright© 1954, 1958, 1987 by The Lockman Foundation. Used by permission.

Originally published as *Help Me - I'm Insecure*

Copyright© 2013 by Joyce Meyer Ministries - Asia

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, or stored in a database or retrieval system, without the prior written permission of Joyce Meyer Ministries - Asia

Joyce Meyer Ministries - Asia
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008

Phone: +91-40-2300 6777
Website: www.jmmindia.org

Straight Talk on INSECURITY - *Hindi*
Overcoming Emotional Battles with the Power of God's Word!

Printed at:
Caxton offset Pvt. Ltd.
Hyderabad - 500 004

विषय सूची

	परिचय	vii
भाग एक	**स्वीकृत**	1
1.	नकारात्मकता को विलोपित करें	3
2.	सकारात्मक का उत्सव मनाओ	17
3.	तुलना करने से बचें	27
4.	संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करें, सीमाओं पर नहीं	35
5.	अपने वरदान का उपयोग कीजिए	47
6.	भिन्न होने का साहस रखिए	57
7.	आलोचना से निपटने के लिए सीखना	73
8.	अपने मूल्य का निर्धारण कीजिए	79
9.	अपनी त्रुटिओं को परिप्रेक्ष में रखिए	87
10.	आत्मविश्वास के सच्चे श्रोत को ढूँढ़िए	91
	सारांश	103

भाग दो **वचन** 105

आत्मविश्वास के विषय में 107

प्रार्थना

आत्मविश्वास के लिए प्रार्थना 110

प्रभु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के लिए प्रार्थना 111

परिचय

क्या आप खेलने, मुखौटा पहनने या अपने अलावा कोई और बनने से थक गए हैं? क्या आप ऐसी स्वतन्त्रता नहीं चाहेंगे कि आप ठीक उसी प्रकार स्वीकार किए जाएँ जैसे आप हैं, बिना किसी दबाव के कि आप जैसे हैं वैसे ही स्वीकार किए जाएँ, बिना किसी दबाव के कि आप कोई ऐसा बनें जिसके विषय में आप सचमुच में नहीं जानते हैं कि आप किस प्रकार बनें।

क्या आप यह सीखना चाहते हैं कि आप जो हैं वह बनने में किस प्रकार सफ़ल होना है?

परमेश्वर चाहता है कि हम स्वयं को स्वीकार करें। हम जो है उसे पसन्द करें और अपनी कमज़ोरियों के साथ व्यवहार करना सीखें। क्योंकि हम सब के पास वह बहुत मात्रा में हैं। वह नहीं चाहता है कि हम उन के कारण स्वयं का अस्वीकार करें।

यीशु हमारी निर्बलताओं को जानता है। (इब्रानियों 4:15)

पवित्र आत्मा हमारी निर्बलताओं में सहायता करता है। (रोमियों 8:26)

परन्तु परमेश्वर ने जगत के निर्बलों और मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, (1 कुरिन्थियों 1:27)।

यदि मैं अपनी कमज़ोरियों को देखती हूँ और आपसे कहती हूँ कि मैं क्या विश्वास करती हूँ कि वे मेरे जीवन मूल्य हैं, यह कुछ नहीं से कम ही होगा। परन्तु हमारा मूल्य किसी बात पर आधारित नहीं है जो हम करते हैं परन्तु उस पर है जो परमेश्वर ने पहले से ही कर दिया है।

हम जैसे हैं वैसे ही परमेश्वर हमें स्वीकार करता है, परन्तु इस बात को समझने से शैतान हमें रोके रखने का कठिन प्रयास करता है। वह विभिन्न श्रोतों से हम पर दबाव लाता है कि हम यह महसूस करें कि हम उस स्तर के अनुसार नहीं हैं जहाँ पर हमें होना चाहिए। वह नहीं चाहता है कि हम यह जान जाएँ कि हम स्वयं को ठीक उसी प्रकार स्वीकार और पसन्द कर सकते हैं जैसा हम हैं, क्योंकि वह जानता है कि यदि हम कभी ऐसा करें तो हममें कुछ अद्‌भुत होने लगेगा।

अपने विषय में हमारे विचार हमारे सभी संबन्धों को प्रभावित करता है–लोगों के और परमेश्वर के साथ। क्योंकि यह परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध को प्रभावित करता है, इसीलिए यह हमारे प्रार्थना जीवन को भी प्रभावित करता है।

हम प्रार्थना और प्रार्थना कर सकते हैं, उन प्रतिज्ञाओं पर आधारित रहते हुए जो परमेश्वर हमें वचन में देता है और सभी सही शब्दों का इस्तेमाल, प्रभावशाली प्रार्थना करते हुए। एक कारण कि प्रार्थना फल नहीं लाती है, यदि हम स्वयं के विषय में ऐसे खराब विचार रखते हैं तो हम विश्वास नहीं करते हैं कि परमेश्वर वह करेगा जो हम माँग रहे हैं। हमारे लिए यह कठिन समय होता है कि हम प्रार्थना करें और विश्वास करें कि परमेश्वर उस बड़े कार्य को करेगा जिसके लिए हम प्रार्थना कर रहें हैं, क्योंकि हम अपेक्षा नहीं कर रहे हैं कि वह ऐसा करेगा! हम अपनी योग्यता

के मूल्यों पर आधारित रहते हैं और अपनी कमज़ोरियों, गिरावटों, पराजयों को अपने विषय में अपने विचारों को नकारात्माक रुप से प्रभावित करने देते हैं।

लोग बहुत अधिक प्रदर्शनकारी होते हैं। हम समय से सीखते हैं कि हम छोटे हैं, जितना अच्छा प्रदर्शन हम करते हैं उतना प्रेम हम प्राप्त करते हैं। परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध में, हमारे विचार इस विधि से जारी रहते हैं। हम सोचते हैं कि परमेश्वर हमें अधिक प्यार करेगा और आशीष देगा, जब हम अच्छा प्रदर्शन करते हैं। क्योंकि हम हर समय सही व्यवहार करने योग्य नहीं होते हैं, इसलिए हम कार्य और प्रयास करना प्रारंभ करते हैं और अपनी सभी कमज़ोरियों पर विजय पाने का प्रयास करते हैं। हम सोचते हैं कि परमेश्वर तब हमें पर्याप्त रुप से प्रेम करेगा कि हमारी ज़रुरत के अनुसार हमारे लिए कार्य करे।

हमारा मूल्य उतना नहीं है जो *हम* करते हैं परन्तु उसमें जो परमेश्वर ने हमें उस कार्य के द्वारा बनाया है जो *उसने* किया है। हर एक मसीही इस सिद्धान्त को जानता है–यह उद्धार का आधार है। हम धर्मी बनाए जाते हैं या परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में लाए जाते हैं उसके द्वारा जो यीशु ने क्रूस पर मरने के द्वारा किया। हम जो करते हैं उसके द्वारा हम उद्धार नहीं कमा सकते–यह परमेश्वर की ओर से एक मुफ़्त उपहार है उस बात के कारण जो *यीशु* ने किया (1 कुरिन्थियों 1:30; इफिसियों 2:8)। हमें केवल यह स्वीकार करना है।

परन्तु यद्यपि प्रत्येक मसीही ने यह विश्वास करने के द्वारा उद्धार प्राप्त किया है कि जो कुछ उसने किया उस कार्य के द्वारा परमेश्वर के साथ सही बनाए जाते हैं। प्रायः केवल बहुत परिपक्व मसीही ही इस सत्य में बने रहते और जीवनभर इसी आधार पर अपने जीवन से व्यवहार करते हैं।

(गलातियों 3:3)। जैसा कि हमने देखा, कि इस प्रकार का विचार उस विचार के विरोध में है जिस प्रकार अधिकांश लोग सोचते हैं। हमें अवश्य ही अपने मन को वचन के द्वारा नया करना है–हमें अपने विचार को बदलना है वचन के द्वारा मन को नया करते हुए जो यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारे सही संबन्ध को सिखाता है न कि अपने कामों के द्वारा।

हमारा मूल्य इस पर आधारित नहीं है कि हम अपने आपको परमेश्वर के लिए किस प्रकार स्वीकारयोग्य बना सकते हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों को ढूँढ रहा है जो उसके प्रति सही हृदय रखते हैं न कि एक सिद्ध प्रदर्शन का रिकॉर्ड। 2 इतिहास 16:9 कहता है, "देख, **यहोवा** की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए..."

"...जिसका मन उसकी ओर निष्कपट है" इसका अर्थ है, परमेश्वर के प्रति एक सही हृदय होना–परमेश्वर से उतना ही प्रेम करना जितना जानते हैं कि उससे करना चाहिए, वह चाहना जो वह चाहता है, उसकी इच्छा को करने की चाह रखना।

परमेश्वर ने उसके साथ सही संबन्ध रखने के लिए हमारे लिए प्रबन्ध किया है (यदि हम यह स्वीकार करते हैं)। वह हमसे प्रेम करता और ऐसे लोगों को ढूँढता है जो उसकी इच्छा के प्रति खुले हुए हैं ताकि वह उनकी ओर से अपने आपको सामर्थी दिखाए और उन्हें आशीष दे।

हम परमेश्वर के प्रेम को कमाते नहीं है; हम उसकी आशीषों को कमाते नहीं हैं। हम उसके पास कभी भी जा सकते हैं और अपनी ज़रुरतों को पूरा कर सकते हैं। इब्रानियों 4:16 कहता है, "इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।"

यद्यपि वह जीवनचर्या जो चल रही है, जिसका हम चुनाव करते हैं वह हमारी उस चीज़ को पाने की योग्यता को प्रभावित करता है जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है। परमेश्वर की सेवा करने और आज्ञापालन करनेवाला एक जीवन उसे अनुमति देता है कि हमें एक ऐसे स्थान पर रखे जो उसके लिए बहुत से द्वार खुले कि हमें लगातार आशीष देने के लिए इस्तेमाल करे। विश्वासयोग्यता आशीषों को लाता है (नीतिवचन 28:20)।

अनाज्ञाकारिता का एक जीवनचर्या निश्चय ही उस बात को प्रभावित करता है जो परमेश्वर हमारे जीवन में करने के योग्य है। क्योंकि बाइबल सिखाती है कि यदि हम बुरे बीज बोते हैं, तो बुरे फल काटेंगे (गलातियों 6:8)।

लोग जो जानबूझकर अनाज्ञाकारिता में जीते और चलते हैं, परन्तु फिर भी चाहते हैं कि परमेश्वर उन्हें आशीष दे, सोचते होंगे कि परमेश्वर का समर्थन पाने के लिए हमें अपनी कमज़ोरियों पर विजय पाने का प्रयास नहीं करना है। जो ये विश्वास करते हैं कि यदि हम किसी क्षेत्र में कमज़ोर हैं, हमें पाप करने का बहाना है। सच्चाई यह हैः परमेश्वर हमें हमारी कमज़ोरियों के बावजूद इस्तेमाल करेगा और उन पर विजय पाने में हमारी सहायता करेगा; हमें उस पर विजय पाने के लिए स्वयं संघर्ष नहीं करना है, परन्तु हमें अवश्य ही इस बात पर विजय पाने के प्रति उन्नति पाना है।

प्रभु ने पौलुस से कहा, "...क्योंकि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है;..." (2 कुरिन्थियों 12:9)। दूसरा कुरिन्थियों 13:4 हमसे कहता है कि, "...हम भी तो उस में निर्बल हैं; परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से जो तुम्हारे लिए है, उसके साथ जीएँगे..."

जब पौलुस रोमियों को अनुग्रह का सन्देश सिखा रहा था तब उसने कहाः

...क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह (परमेश्वर की कृपा और करुणा) बहुत हो?

कदापि नहीं! हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएँ?

रोमियों 6:1-2

दूसरे शब्दों में, क्या हमें यह देखना चाहिए कि हम कितना पाप कर सकते हैं व्योंकि पाप करना परमेश्वर को एक अवसर देता है कि हमें अनुग्रह दे? बहुत सारे शब्दों में पौलुस की प्रतिक्रिया थी, "वह ज़ोर से पुकार कर कहता है–तुम कैसे पाप कर सकते हो यदि तुम पाप के प्रति मरे हुए हो?"

पौलुस उन्हें यह सिखा रहा था कि वे मसीह में कौन हैं। वे और हम स्वीकारयोग्य हैं, क्योंकि यीशु ने हमें स्वीकारयोग्य बनाया है (रोमियों 6:5-16)।

हमें अपने साथ संबन्ध में आना है और यह सीखना है कि हमारे मूल्य इस बात में नहीं है कि हम क्या करते हैं, परन्तु इस बात में है कि हम कौन हैं, परमेश्वर यही चाहता है। वह चाहता है कि हम जो भी हैं वो बनने की इच्छुक हों, हमारी कमज़ोरियाँ और सबकुछ।

बिस्तर से उठने से पहले आधे घंटे तक जागकर और अपने आप से घृणा करके अपने दिन को प्रारंभ न करना अद्भुत हैं! या शैतान को आपके कानों में उन गलतियों की सूची को जो आप पिछले दिन किए हों बुदबुदाते सुनते हुए उठना और आप से यह कहना कि आप एक पराजय हैं और परमेश्वर से कुछ भी भलाई की उम्मीद नहीं कर सकते हैं। बहुत

से लोग इससे पहले कि वे सुबह अपने पैरों को ज़मीन पर रखें, नीचे गिरा दिए जाते हैं!

शैतान की योजना हमें इस बात में बने रहते हुए धोखा देना है कि हमारा आधार हमारे प्रदर्शन में है और तब हमारी कमियों और हमारी गलतियों पर हमारे ध्यान को बनाए रखे। शैतान चाहता है कि हम अपने विषय में एक निम्न विचार रखें और असुरक्षित हों ताकि हम परमेश्वर के लिए अप्रभावशाली रीति से जीवन जिएँ। दुःखदायी और परमेश्वर की आशीषों को न प्राप्त करनेवाले बने रहें क्योंकि हम नहीं सोचते हैं कि हम उसके हक्कदार हैं।

एक बार जब हम अपने साथ शान्ति स्थापित कर लेते हैं, हम दूसरे लोगों के साथ शान्ति स्थापित करना प्रारंभ करते हैं। यदि हम कभी अपने आपको स्वीकार करना और पसन्द करना सीखते हैं, हम दूसरों को भी स्वीकार करना और पसन्द करना सीखते हैं। मैं यह व्यक्तिगत अनुभव से जानती हूँ कि जितना अधिक मैं अपने आपको स्वीकार और पसंद करने के योग्य बनती हूँ अपनी कमज़ोरियों और गलतियों के बावजूद, उतना ही अधिक मैं उनकी कमज़ोरियों के बावजूद उन्हें स्वीकार करने और पसन्द करने के योग्य होती हूँ।

हम सभी असिद्ध हैं, और परमेश्वर हमसे उसी प्रकार प्रेम करता है जैसे हम हैं।

इस पुस्तक की बाइबल आधारित सिद्धान्तों को प्रयोग करने के द्वारा आप व्यक्तिगत असुरक्षा के भाव पर विजय प्राप्त करेंगे और अपने जीवन के लिए परमेश्वर के अद्‌भुत योजना को पूरा करने के लिए स्वयं को तैयार करेंगे।

भाग एक

स्वीकृत

1

नकारात्मकता को विलोपित करें

यदि आप अपने आत्मस्वीकार्यता और अपने विषय में विचार को बढ़ाना चाहते हैं, तो ठीक यहीं पर और अभी निर्णय करें कि आपके विषय में आपके मुँह से एक भी नकारात्मक शब्द अब कभी बाहर नहीं आएगी।

अच्छी चीज़ों को पहचानिए

मैं प्रार्थना करता हूँ कि विश्वास में तेरा सहभागी होना, तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान में, मसीह के लिये प्रभावशाली हो?

फिलेमोन 1:6

हमारे विश्वास का संवाद प्रत्येक *भली बात* को पहचानने के द्वारा बनाया जाता है जो *यीशु मसीह के द्वारा* हममें हैं, न कि *अपने* भीतर के प्रत्येक *गलत* बात को पहचानने के द्वारा।

शैतान चाहता है कि हम प्रत्येक बुरी बात को पहचाने जो हम अपने में देखते हैं, क्योंकि वह नहीं चाहता है कि हमारे विश्वास का संवाद प्रभावशाली हो। वह चाहता है कि हम प्रत्येक जागृत क्षण को अपने मन में और अपने मुँह से इस बात को अंगीकार करें कि हम कितने निकृष्ट हैं, क्योंकि वह भाइयों को दोषी ठहरानेवाला है (प्रकाशितवाक्य 12:9,10), वह लगातार प्रयास करता है कि हमारे ध्यान को इस बात से वापस अपनी कमियों पर ले जाए कि हम मसीह में कौन हैं।

शैतान ऐसे अवसरों के द्वारा हम पर बमबारी करना चाहता है कि हम अपने विषय में नकारात्मक विचार रखें ताकि हममें से अधिकांश लोग सोचने के तरीके की ओर लौट जाएँ जिनमें से अधिकांश लोग विकसित हुए हैं। हम पुनः इस धोखे में गिर जाएँगे कि हमारा मूल्य हमारे प्रदर्शन पर आधारित है, और हमारी त्रुटियों के कारण हम अयोग्य हैं।

नकारात्मक रुप से अपने विषय में बात न करना महत्वपूर्ण होने का एक कारण यह है कि हम जो कहते हैं उस से ज़्यादा हम अन्य लोग क्या कहते हैं उस पर विश्वास करते हैं। परन्तु एक बार जब हम सच में यह समझते हैं कि हम मसीह में कौन हैं और देखते हैं कि उसने अपने लहू बहाने के द्वारा हमारे लिए कितना कुछ किया है कि हमें योग्य बनाए। हम समझेंगे कि हम वास्तव में अपने स्वर्गीय पिता का अपमान कर रहें हैं अपनी गलतियों पर प्रमुख रुप से गलतियों, पराजयों, और त्रुटियों पर मनन करने के द्वारा। प्रेरितों के काम 10:15 कहता है, "...कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।"

परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में

प्रथम दर्शनों में से एक जो परमेश्वर ने मुझे दर्शन दिया वह धार्मिकता पर

था। "प्रकाशन" से मेरा तात्पर्य है, कि एक दिन अचानक आप कुछ इस हद् तक समझते हैं कि वह आपके जीवन का भाग बन जाता है। ज्ञान न केवल आपके मन में है–आपको अब अपने मन को उसके प्रति नया करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप आश्चर्य या आशा नहीं करते हो कि यह *सत्य* है-आप *जानते* हैं।

मैं *जानती* थी कि मैं मसीह में धर्मी हूँ क्योंकि परमेश्वर ने मुझे 2 कुरिन्थियों 5:21 की समझ दी थीः

> जो (मसीह) पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता (जो हमें होना चाहिए, उसके द्वारा प्रमाणित और सम्मति प्राप्त और उसके साथ सही संबन्ध में, उसकी भलाई के द्वारा) बन जाएँ (देखा जाए और किसी और के उदाहरण के रुप में)।

धार्मिकता परमेश्वर का वरदान हैं

रोमियों 4:24 हमसे कहता हैः

> ...हमारे लिये भी जिनके लिए विश्वास धार्मिकता (परमेश्वर के लिए स्वीकारयोग्य स्थिति) गिना जाएगा, अर्थात् हमारे लिये जो उस पर विश्वास करते हैं, (भरोसा रखते, आश्रित होते) जिस ने हमारे प्रभु यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।
>
> रोमियों 4:24

मैं समझती थी कि धार्मिकता कुछ ऐसा है जो हमें दिया गया है। यह हममें "लगाया" गया है-"प्रमाणित और समर्पित" किया गया है, श्रेय स्वरुप

हमारे विश्वास के द्वारा, जो परमेश्वर ने किया है अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा। यीशु जो पाप से अज्ञात था वह पाप बन गया ताकि हम मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।

सबसे बढ़कर शैतान चाहता है कि हम वास्तविकता में चलें कि हम परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में हैं। वह चाहता है कि हम हमेशा उस बात को स्मरण करते रहें कि हमारे साथ क्या गलत है इसके बजाए कि यीशु के लहू के द्वारा हममे क्या सही है।

मैं धार्मिकता के इस प्रकाशन में कुछ वर्षों तक चलती रही थी और कुछ समयों तक वचन को सिखाती रही थी, जब कुछ ऐसा हुआ जिसने मुझे दिखाया कि अपने विषय में नकारात्मक बातें न करना कितना महत्वपूर्ण है। जब हम एक दर्शन को प्राप्त करते हैं, हम उसके लिए उत्तरदायी ठहरते हैं, और मैं अपने विषय में नकारात्मक बोलने के लिए उत्तरदायी ठहराई गई।

परमेश्वर के वचन के अनुरूप बात करने का महत्व

अपने बेटे दानिय्येल को जन्म देने के लिए मैंने और डेव ने योजना बनाई और प्रार्थना की। वह एक दुर्घटना नहीं है, हमें वह चाहिए था परन्तु उसके पैदा होने के पश्चात्, मैंने अपने जीवनचर्या में नकारात्मक रुप से अपने आपको प्रभावित करने दिया।

मैं घर पर अधिक समय व्यतीत करने की आदि नहीं थी। मेरा कुछ पौंड वज़न बढ़ गया और मेरी त्वाचा में परिवर्तन आने लगा जो सन्तान के जन्म के विषय में सामान्य था। परन्तु मैंने सोचा कि मैं बदसूरत और मोटी हो

गई हूँ और हमेशा इस प्रकार रहूँगी। मैं एक स्थायी आलसी स्वभाव में पड़गई।

एक सुबह डेव के कार्यस्थल जाने से पूर्व, वह मुझे प्रोत्साहित करने और खुश करने का प्रयास कर रहे थे। इस प्रक्रिया में उन्होंने मुझे कहा कि मुझे सचमुच उस प्रकार से अभिनय नहीं करना है जैसी मैं हूँ, जो मैं अच्छी रीति से जानती थी। मैं उस पर पागल हो गई। तब उन्होंने कुछ और कहा, और मैंने कुछ और कहा, और अन्ततः मैंने अपना माथा पीट लिया- और कई दिनों तक अपना मुँह फुलाकर बैठ गई।

मेरी पृष्ठभूमि बहुत नकारात्मक थी। मेरा एक नकारात्मक मुँह था और सबकुछ और सब के प्रति एक नकारात्मक विचार था, स्वयं के लिए भी। जब मैंने गलतियाँ की या गलत बातें की तो, मेरे लिए यह सोचना सामान्य था, "मैं कभी कुछ भी सही नहीं करती हूँ–मैं एक बहुत बड़ी बेवकूफ़ हूँ–जो कुछ मैं करती हूँ हर समय गलत ही करती हूँ।"

डेव के बाहर जाने के पश्चात् मैं अपने घर में, रसोई के काम और दानिय्येल की देखरेख करते हुए अकेली थी और अभी जो हुआ उस पर विचार कर रही थी। मैंने अपने आप से बुरी बातें कहना प्रारंभ कियाः "ये सही है, जॉयस, तुम बहुत बड़ी बेवकूफ़ हो। तुम बहुत बुरी दशा में हो। तुम सोचती हो कि वचन को पढ़ने से तुम्हारी सहायता होगी? कुछ भी तुम्हारी सहायता नहीं करनेवाला। तुम जब तक इस पृथ्वी पर रहोगी तुम इसी दशा में रहोगी और तुम हमेशा ही बुरी दशा में होगी। इसे बिल्कुल भूल जाओ, तुम कभी सही नहीं होगी।"

अचानक मैंने एक दुष्ट को महसूस किया, और एक दम घुटने जैसा अनुभव मेरी ओर आ रहा था। ये इतना मज़बूत था कि मैं इसे लगभग देख

सकती थी। परमेश्वर के वचन के मेरे ज्ञान से, मैंने तुरंत एक शैतानी ताक़त को जाना जो स्वयं को मुझ से जोड़ना चाहती थी क्योंकि उन बातों के कारण जो मैं अपने विषय में कह रही थी।

वचन के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हम अपने में रोपते हैं। क्योंकि बिना सोचे मैंने यूँही उसे बोलना प्रारंभ कियाः "*मैं* मसीह में परमेश्वर की *धार्मिकता* हूँ। मैं मसीह में परमेश्वर की *धार्मिकता* हूँ। मैं मसीह में परमेश्वर की *धार्मिकता* हूँ। उसका लहू मुझे ढ़ाँकता है।"

इस प्रकार यह भीतर आया, दुष्ट की उपस्थिति वापस चली गई और कमरे में माहोल पुनः स्पष्ट हो गया। यह कहने की ज़रुरत नहीं कि इस अनुभव ने मुझ में एक पवित्र भय ला दिया वचन के अनुरूप बात करने के महत्व के विषय में–विशेषकर मेरे विषय में!

मानवजाति में एक स्वभाविक प्रवृत्ति नकारात्मक सोचने की है। "यद्दपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है सो बुरा ही होता है;" (उत्पत्ति 8:21)। यह नकारात्मक प्रवृत्ति तब तक जारी रहेगी जब तक हम अपने जीवन में इस प्रक्रिया को मोड़ते नहीं हैं।

परमेश्वर ने मेरे साथ तब से कार्य किया है जब से अपने आपको नकारात्मक होने और नकारात्मक विचारों को सोचने से परिवर्तित करने के लिए वचन में थी कि हर समय फिर कभी ऐसे न सोचूँ और ऐसी बातें न करूँ।

क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।
नीतिवचन 23:7

मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि आप कभी भी अपने विषय में बुरी बातें न बोलें न सोचें। अपने विषय में आपके विचार एक बड़ा परिवर्तन लाता

है–उत्तरित प्रार्थनाओं में, जो आप उसमें परमेश्वर से प्राप्त कर सकते हैं, और इसमें आपको परमेश्वर कितना उपयोग कर सकता है। परमेश्वर आपको उपयोग करने में सक्षम है, परन्तु आपको उसे करने देना है। यह विश्वास करने के द्वारा उसे ऐसा करने दें कि उसने आपको भली बातें प्राप्त करने योग्य बनाया है जो वह आपको देना चाहता है। उसे ऐसा करने दें यह विश्वास करने के द्वारा कि आप वह करने के लिए योग्य हैं जो वह आपको करने के लिए कहता है। क्योंकि वह आपको उपयोग भी करेगा और आपके विषय में उन विश्वासों के अनुरूप केवल बातें करेगा।

परमेश्वर का प्रेम असुरक्षा को बाहर निकालता है

"हम उसे प्रेम करते हैं क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया है" (देखिए 1 यूहन्ना 4:19)। यदि हम परमेश्वर को हमें प्रेम करने नहीं देते, तो हम शायद ही उसे वापस प्रेम करने पाएँगे। यदि हम कुछ हद तक हमारे साथ शांति स्थापित नहीं कर सकते हैं तो बाहर जाकर लोगों से प्यार करने के काबिल नहीं होंगे, जैसा कि बाइबल हमसे करने के लिए कहती है। "...तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो..." (मरकुस 12:31)।

किसी भी बात से बढ़कर, लोगों को स्वयं के लिए परमेश्वर के प्रेम की प्रकाशन की ज़रूरत है। हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम हमारे विश्वास की नीव है। पाप से हमारी स्वतंत्रता और दूसरों की सेवा में असुरक्षा के रूप में भय के बिना कदम रखने की हमारी योग्यता का आधार है।

परमेश्वर ने हम सबको एक अभिलाषा और इच्छा हमारे हृदय में एक चाह के साथ बनाया है कि हम प्रेम किए जाएँ। और वचन हमें सिखाता है कि परमेश्वर हमसे उतना प्यार करता है जितना वह यीशु से करता है! (देखिए यूहन्ना 17:23)।

लोग जो सोचते हैं कि परमेश्वर के साथ उनका सही संबन्ध इस बात पर आधारित है कि वे अपनी गलतियों पर विजय पाने के विषय में कितनी उन्नति किए है सोचते हैं कि उन्होंने अपने पराजयों और दुर्दशा से परमेश्वर को दुःखी कर दिया है। हम परमेश्वर को दुःखी नहीं कर सकते हैं। प्रेम थकित नहीं होता है और हम इसके कारण नहीं बन सकते हैं कि परमेश्वर हमसे प्रेम न करें। प्रेम कुछ ऐसा नहीं है जो ऐसा करता है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। (1 यूहन्ना 4:8)

बहुत से लोग एक शर्मिंदगी स्वभाव विकसित करते हैं इस बात के परिणामस्वरूप कि विभिन्न लोग या माता-पिता, विद्यालय के शिक्षक, मित्र, अजनबियों के द्वारा जो अन्यायपूर्ण और निर्दयी व्यवहार जो उनके प्रति किया जाता है। हमारे स्वभाव और हमारे विषय में हमारे विचार कुछ समय के अंतराल में हमारे भीतर विकसित होता है। यदि हम नहीं जानते हैं कि हम मसीह में प्यारे हैं, हम असुरक्षित बन सकते हैं। अपने मूल्य का निर्धारित इस बात को करने न दीजिए कि अन्य लोग कैसा करते है।

लोग जो आत्मविश्वास की कमी रखते है अपने भीतर एक नीजि छोटा युद्ध लड़ते रहते हैं, अपने विषय में अधिकतर समय। यदि हम प्राकृतिक संसार पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो यह कठिन नहीं है कि प्रति दिन सुबह उठे और अपने भीतर की बहुत सारी गलत बातों की सूची बनाएँ। शैतान हमारे मस्तिष्क में हमारे मन में झूठ डालता है कि हम अपने विषय में उन बातों पर एक नज़रिया बनाएँ जो अन्य लोग कहते है।

शैतान का एक स्वभाव है, और वह चाहता है
कि आप में भी वह स्वभाव हो!

एक स्वभाव है जो शैतान चाहता है कि हम आत्मनिर्भरता के मध्य केंद्रित

रहें। यह दो तुल्य रूप से बराबर कष्टदायक रूप लेता है। मैं नहीं सोचती कि वह इस बात की चिंता करता है कि एक पक्ष के लोग क्या चुनाव करते है। क्योंकि दोनों प्रकार का स्वभाव हमें परमेश्वर की इच्छा से दूर ले जाता है और हमें उस सामर्थ के अनुसार कार्य करने से रोकता है जो परमेश्वर की संतान होने के नाते हमें उपलब्ध है। दोनों प्रकार का स्वभाव इस विश्वास से उत्पन्न होता है कि हमारा मूल्य हम पर अधारित है–परमेश्वर पर नहीं।

एक अभिमानी, घमण्डी, स्वयं पर निर्भर, आत्मनिर्भर स्वभाव कहता है, "चाहे कुछ भी हो मैं इसका सामना कर सकता हूँ, मुझे परमेश्वर की आवश्यकता नहीं हैं।" हममें से बहुत से लोग नहीं सोचते कि हममे यह स्वभाव है और कहते हैं कि हमें परमेश्वर की ज़रूरत है, परंतु यह स्वभाव हमारे कार्यों में प्रगट होता है। हम ऐसा व्यवहार नहीं करते हैं कि मानों हमें परमेश्वर की ज़रूरत है।

विश्वासियों के रूप में हमें स्वयं पर भरोसा रखनेवाले नहीं परंतु परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाले होना है। बाइबल बार-बार कहती है कि हमें स्वयं पर भरोसा नहीं रखना चाहिए बजाए, हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना है-कि वह हमारे *द्वारा* कार्य करेगा।

दूसरे स्वभाव वाले लोगों के साथ शैतान चाहता है कि वे स्वयं को दोषी ठहराएँ। वे अपनी गलतियों और त्रुटियों के लिए स्वयं पर क्रोधित होते है। वे स्वयं से घृणा करते और सोचते हैं कि वे अनुपयोगी और बेमूल्य और गंदे है। कुछ लोग अपने विषय में बहुत उच्च सोचते हैं और दूसरे अपने विषय में बहुत निम्न सोचते हैं।

बहुत से लोग अपने रूप को पसंद नहीं करते। वे सोचते है कि वे अनाकर्षक हैं या इस बात से कायल हैं कि वे गंदे हैं जबकि वे सचमुच में आकर्षक होते हैं। शैतान झूठा है (यूहन्ना 8:44) हम कौन हैं और

परमेश्वर ने हमारे लिए क्या रख छोड़ा हैं इस सत्य को देखने से हमें रोकने का प्रयास करने के लिए उसका हथियार हमें धोखा देना है। वह चाहता है कि हमें जीवन के पूर्ण आनंद उठाने से रोके रखे जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है और परमेश्वर के लिए हमारे प्रभाव को विनष्ट कर दे।

एक बार जब मैं एक सभा ले रही थी प्रभु ने मुझे उभारा कि मैं उन सभी श्रोताओं से प्रार्थना हेतु आगे आने के लिए कहूँ जो अपने आपको अनाकर्षक महसूस करते थे! मैं निश्चय ही आश्चर्यचकित हुई कि उसने मुझे ऐसा करने के लिए कहा। यही एकमात्र समय था जब मैंने अपनी सेवकाई के उन सारे वर्षों में कभी ऐसा किया हो।

मैंने कहा, "हर कोई जो अपने आपको गंदा महसूस करते है यहाँ आईए।" प्रतिक्रिया वृहद् थी!

एक लड़की जो उस पंक्ति में थी जो फैशन मॉडल दिख रही थी। वह शानदार थी। मैं पहले उसकी ओर गई क्योंकि मैंने सोचा कि उसने वेदी की पुकार को गलत समझा।

"क्या आप समझते हैं कि यह पुकार ऐसे लोगों के लिए थी जो स्वयं के विषय में सोचते हैं कि वे गंदे हैं?" मैंने पूछा।

उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी, जब उसने कहा "मैं अपने जीवनभर यही सोचती रही कि मैं कितनी भयानक दिखती हूँ।" जब कुछ ऐसा होता है तो आप सोचते हैं, "क्या उन्हें आईने की ज़रूरत है या कुछ और?" यह शैतान के द्वारा धोखे देने के एक सिद्ध उदाहरण है। यदि शैतान आपको इतना व्यस्त नहीं रखता कि आप अपने आपको अपनी कमज़ोरियों के लिए पहले पकड़ते रहें, वह कुछ ऐसा इस्तेमाल करने का प्रयास करेगा जो आपके लिए ठीक नहीं है या आपके विषय में कुछ ऐसा भला सोचने देगा कि यह आपके लिए खराब है!

परमेश्वर सम्मति देता है

गर्भ में रचने से पहले ही मैंने तुझ पर चित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहले ही मैंने तुझे अभिषेक किया; मैंने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता बनाया।

यिर्मयाह 1:5

परमेश्वर ने मुझको और आपको बनाने के बाद यह नहीं कहा, "अब मैं सोचता हूँ कि, मैं तुम्हें जानूँगा।" बाइबल कहती है कि हमें गर्भ में बनाने से पहले, वह हमें जानता था और हमें *सम्मति* दिया।

इफ़िसियों 1:6 में हमसे कहा गया है कि परमेश्वर ने हमें अपने प्यार में स्वीकारयोग्य बनाया है। इसका तात्पर्य है कि हम परमेश्वर के प्रति यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा स्वीकारयोग्य बनाए जाते हैं।

परमेश्वर ने किसी और के सामने हमें सम्मति दिया है इससे पहले कि कोई हमें असम्मति देने का कोई मौका भी पाए। यदि परमेश्वर हमें सम्मति देता है और हम जैसे हैं वैसे स्वीकार करता है, तो इस बात की चिंता क्यों करना है कि कोई और हमारे विषय में क्या सोचता है। यदि परमेश्वर हमारी ओर है तो कौन हमारे विरोध में हो सकता है जो कुछ अन्तर लाता है? (रोमियों 8:31)

सिद्धताः असंभव लक्ष्य

कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो।

इफिसियों 4:29

मेरा बेटा डानि, मेरे पति डेव और मेरे साथ गोल्फ खेल रहा था जब वह नौ वर्ष का था। वह उस समय ही एक अच्छा गोल्फ का खिलाड़ी बन चुका था, परंतु उसकी एक गंभीर समस्या थी। उसका एक स्वभाव था कि जब वह अच्छी रीति से खेलता था तब वह बहुत प्रसन्न होता था, परंतु यदि वह एक बुरा शॉट खेलता था तो निराश हो जाता था और अपने पर दोष लगाना प्रारंभ कर देता था। वह अपने आपसे कुछ इस प्रकार कहता था, "ओह, मूर्ख डानि, तुम सब कुछ गलत करते हो!"

उसने महसूस किया कि यदि वह सब कुछ अच्छी रीति से नहीं कर सकते है तो वह बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। यदि वह सब कुछ ठीक रीति से नहीं करता हैं वह स्वयं के विषय में नकारात्मक टिप्पणियाँ करने लगता। शैतान छोटी उमर में ही डानि के अंदर स्वयं को दोषी ठहराने का स्वभाव लाने का प्रयास करता था।

डेव और मैं उसके साथ व्यवहार करना शुरू किया और उसे सिखाना प्रारंभ किया कि यह खतरनाक आदत है।

"डानि", हम उसे कहते। "अपने विषय में इस प्रकार की बातें कहना कोई भी भली बात नहीं होगी। न ही इससे किसी और को लाभ होगा जो उस समय तुम्हारे साथ होंगे जब तुम ये बातें कहोगे।"

यह हम सब पर भी लागू होता है। न केवल हम बुरा महसूस करते हैं जब हम अपने विषय में नकारात्मक रूप से बातें करते है। परंतु दूसरे लोग जो इस प्रकार से नकारात्मक रूप से स्वयं के विषय में बात करते सुनते है वे बुरा महसूस करते हैं। नीचे लिखे पद में से एक में पौलुस हमें चेतावनी देता है कि हम बुरी भाषा का इस्तेमाल न करें या बक बक को अपने मुँह

से आने न दें। वह कहता है, "और परमेश्वर की पवित्र आत्मा को शोकित मत करो..." (इफ़िसियों 4:30)। स्पष्टतः इस प्रकार की नकारात्मकता पवित्र आत्मा को दुःखी करता है। यह हमारी आत्मा को भी दुःखी करता है। परमेश्वर ने हमें नकारात्मक बोलने या प्राप्त करने के लिए नहीं बनाया है। इसलिए हममें से कोई भी ऐसे व्यक्ति के आस पास नहीं रहना चाहते हैं जो हमेशा नकारात्मक हो।

यदि एक व्यक्ति जो एक गलती करता है कहता है, "गलती करने से मुझे खुशी नहीं होती है, परंतु मैं सीख रहा हूँ। मैं अगली बार अच्छा करूँगा। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि मैं उतना कर रहा हूँ जितना मैं योग्य हूँ।" तब हर किसी की उन्नती होती है। जब कोई अपने विषय में सही महसूस करता है उसके आसपास के लोग भी ऐसा करते हैं। वह अपने गलत कार्य के लिए बिना नकारात्मक हुए या दोषी महसूस किए उत्तरदायत्व ले रहा है। यही स्वभाव और कार्य हमें भी करना चाहिए।

डानि को सिखाने के लिए कि वह अपने विषय में नकारात्मक बातें ना बोले, अगली बार मैंने एक बुरा शॉट खेला, मैंने सोचा, "अब मैं उसके समान बर्ताव करने जा रही हूँ जैसा उसने किया था और देखें कि क्या वह बात को समझता है कि ऐसा करना मूर्खता का कार्य होगा।"

मैंने कहना प्रारंभ किया। "अरे, मूर्ख जॉयस, तुम जानती हो, तुम कभी कुछ अच्छा नहीं कर सकती।" डानि मुझे सुना भी नहीं था। मैंने पुनः यह कहना प्रारंभ किया, परंतु यह मेरे लिए अजीब सा था जबकि मेरा वास्तव में यह मतलब नहीं था। केवल उन बातों को अपने मुँह से कहना और अपने कानों में सुनना मेरे आत्मा को दुःखी कर दिया।

सामर्थ हमारे मुँह में है

क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष, और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।

मत्ती 12:37

यदि हम अपने विषय में बुरी बातें बोलते हैं, तो हम दोषी महसूस करेंगे। आइए सक्रिय रूप से उन बातों को लागू करें जो यीशु ने हमें ऊपर लिखित वचन में सिखाया कि सकारात्मक रूप से स्वयं के विषय में बातें करें असुरक्षा से विजय पाने का पहला कदम के रूप में और कभी *अपने विषय में नकारात्मक रूप से बातें न करें।* उन शब्दों को कहें जो आपको सामर्थ देती हैं-ऐसे शब्द नहीं जो आपको कमज़ोर करती हैं।

लक्ष्य की ओर बढ़ते चलें

हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ: परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ,

निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

फिलिप्पियों 3:13,14

परमेश्वर इस बात की परवाह नहीं करता कि हम सिद्धता तक पहुँचे हैं या नहीं ,परंतु इस बात कि, की हम लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं या नहीं। उस ज्ञान के अनुसार बात और कार्य करें कि यीशु जीवित है और आपके जीवन में कार्य कर रहा है, और चाहे आप कितनी भी बड़ी गलती करें, यीशु का लहू उसे ढ़ाँकता है।

2

सकारात्मक का उत्सव मनाओ

असुरक्षा पर विजय पाने की दूसरी कुंजी पहली से संबंधित है: *अपने विषय में सकारात्मक बातें कहो और उस पर मनन करो।*

हमने सीख लिया है कि स्वयं के विषय में नकारात्मक बातें सोचना और कहना कितना विनाशकारी हो सकता है। अब आईए अपने विषय में सकारात्मक बातें सोचने और बोलने की सामर्थ पर एक नज़र डालें जो वचन के अनुसार है।

जैसा कि हमने देखा है स्वयं के विषय में हमारे विचार और शब्द बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं। हमें स्वयं के विषय में–उद्देश्यपूर्वक अच्छी बातों पर मनन करने की आवश्यकता है। हमें स्वयं के विषय में अच्छी बातें उन पर सोचने और स्वयं से उन्हें बोलने की ज़रूरत हैं।

यदि हम अपने विषय में नकारात्मक रूप से बातें करते हैं, हम अपने आपको नकारात्मक रूप से देखना प्रारंभ करते हैं। जल्द ही हम वह नकारात्मकता अपने सभी आस-पास के लोगों तक पहुँचाने लगते हैं। यह

अक्ष्यरतः सत्य है कि हमारे विषय में दूसरों के विचार हमारे अपने स्वयं के विचार से ऊपर नहीं होंगे।

यदि मैं ऐसे लोगों के चारों ओर हूँ जो आत्मदृढ़ता पर दृढ़ता रखते हैं, और उस दृढ़ता को दूसरों तक पहुँचाते हैं, तो मैं अपने आप उनमें दृढ़ता पाती हूँ। परंतु यदि वे मुझ से कहते हैं कि वे स्वयं में विश्वास नहीं करते तो मैं उनमें दृढ़ता या भरोसा रखना बहुत कठिन पाती हूँ।

यही सिध्दांत हम पर भी लागु होता है। यदि हम चाहते हैं कि दूसरें हम पर भरोसा करें तो हमें आवश्य ही उन्हें दिखाना चाहिए कि हम अपने आप में भरोसा रखते हैं।

राक्षस या टिड्डियाँ?

> फिर हम ने वहाँ नपीलों (या राक्षसों) को, अर्थात् नपीली जातिवाले अनाकवंशियों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे।
>
> गिनती 13:33

गिनती के पुस्तक में बारह भेदियों को प्रतिज्ञात देश में जासूसी करने के लिए भेजे जाने का वर्णन किया गया है। दस भेदी बुरे समाचार के साथ वापस आए और दो अच्छे विवरण के साथ वापस आए। वे दस जो बुरे समाचार के साथ वापस आए उन्होंने उस देश में राक्षसों को देखा और भयभीत हो गए। "हम अपनी दृष्टि में टिड्डियों के समान दिखते थे और उनकी दृष्टि में भी।" दूसरें शब्दों में शत्रु ने उन्हें उसी प्रकार देखा जैसा उन्होंने अपने दृष्टि में देखा।

ये दस भेदी पराजित होकर अपने घर को भाग गए। क्यों? क्योंकि उस देश के राक्षसों पर विजय पाने की योग्यता उनमें नहीं थी? नहीं। वे वापस अपने घर को भाग आए क्योंकि जिस तरीके से उन्होंने अपने आपको देखा। उन नकारात्मक स्वभाव के कारण जो वे अपने प्रति रखते थे।

सकारात्मक अंगीकार की सामर्थ

> ...कालेब ने मूसा के सामने प्रजा के लोगों को चुप कराने के विचार से कहा, "हम अभी चढ़ के उस देश को अपना कर लें; क्योंकि निःसंदेह हम में ऐसा करने की शक्ति हैं।"
>
> गिनती 13:30

यहाँ पर हम दो भेदियों में से एक कालेब की प्रतिक्रिया देखते हैं। बहुत ही अधिक विरोधात्मक परिस्थिति के परिदृश्य में भी उसका विवरण था, "हम सक्षम है।" उसके ऐसे कहने का कारण था क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर उन्हें प्रतिज्ञा देश में जाने और उस पर अधिकार करने के लिए उनसे कहा है।

नकारात्मक विचारों और बातचीत पर विजय पाने के लिए जो काफ़ी लंबे समय से हमारी जीवनचर्या का एक भाग बन गया है, हमें अवश्य ही एक अनुभूत प्रयास अच्छी सोंच और बातें अपने विषय में अपने आपसे कहना चाहिए, सकारात्मक अंगीकार करने के द्वारा।

शायद आप सोचते हैं कि, आप अपने आपसे बात करते हुए नहीं घूमते हैं, परंतु आप ऐसा करते हैं। चाहे आप ज़ोर से बात न करते हो, परंतु आपके भीतर "स्वयं से बातचीत" हमेशा चलती रहती है।

मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि आप निजी रूप से सकारात्मक बातचीत करना प्रारंभ करें, उदाहरण के लिए जब आप स्नान कर रहे हो या अकेले कार चला रहे हों, लक्ष्यपूर्वक अपने विषय में अच्छी बातें कहना प्रारंभ कीजिए।

परमेश्वर के वचन के अनुरूप अंगीकार कीजिए

...परंतु हम में मसीह का मन (की भावनाएँ और लक्ष्य) है।

1 कुरिन्थियों 2:16

जब मैं कहती हूँ कि हमें अपने विषय में सकारात्मक अंगीकार करना चाहिए, तो मेरा तात्पर्य यह है कि हमारे मुँह को उस बात के अनुसार होना चाहिए जो वचन हमारे विषय में कहता है। उदाहरण के लिए परमेश्वर का वचन कहता है कि हमारे पास मसीह का मन है। इसलिए हमें अपने विषय में यही बात कहनी चाहिए।

बाइबल यह भी कहती है कि हमारे जीवन के लिए एक बुलाहट है, कि हममें से हर एक मेलमिलाप और मध्यस्थता की सेवा के लिए बुलाए गए हैं (2 कुरिन्थियों 5:18-20; 1 तिमुथियुस 2:1-3) इसका यह तात्पर्य नहीं कि हम सब किसी मध्यस्थ के पद पर हैं परंतु हम सब पर परमेश्वर के द्वारा उपयोग किए जाने की बुलाहट है–और हमें ऐसा कहना चाहिए।

आत्मिक अंगीकार करिए

...हियाव बाँध कर परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का..

फिलिप्पियों 1:14

बहुत वर्षों पूर्व परमेश्वर ने मेरे हृदय में अपने जीवन के विषय में अंगीकारों की एक सूची बनाने की एक बात डाली। जब मैंने इसे किया तो वे सौ के ऊपर थी।

मैंने प्रत्येक अँगीकार के समर्थन में एक वचन पाया जो मैंने सूची में डाली थी। यह करने में मुझे समय लगा, परंतु यदि आप अपने लिए वचन में खोजने का प्रयास करेंगे तब आप उसमें सोना पाएँगे।

जब मैंने ये अंगीकार करना शुरू किया, तो वे बातें जो मैंने कहना प्रारंभ किया वे नहीं हो रही थी। वे उस क्षण मेरे जीवन में वास्तविकता नहीं थी।

उदाहरण के लिए, उस समय मैं अपराध और दोष भावना की छाया के आधीन जी रही थी। परंतु बहुत बार प्रतिदिन मैं कहती, "मैं यीशु मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता हूँ। मैं अलग की गई हूँ और मेम्ने द्वारा पवित्र की गई हूँ। मेरे जीवन पर एक बुलाहट है, और परमेश्वर मेरा उपयोग करने जा रहा है।"

मेरे जीवन के विषय में मेरा एक बुरा स्वभाव था। मुझे अपने आपको कायल करना पड़ता था कि मैं ठीक हूँ इससे पहले कि परमेश्वर मेरे द्वारा सचमुच में कुछ करे।

छः महिनों तक, मैं उस सूची को दिन में एक या दो बार पढ़ने की अभ्यस्त थी। मैं अब भी उन सकारात्मक अंगीकारों के एक अच्छे हिस्से को याद करती हूँ। वे शब्द अब मुझ में बनाए गए है।

अपने आप में विश्वास कीजिए – परमेश्वर आप के द्वारा जो कर सकता है उसमें

...उन लोगों पर चढ़ने की शक्ति हम में नहीं है; क्योंकि वे हम से बलवान् हैं।

गिनती 13:31

परमेश्वर को आपकी ज़रूरत है। परंतु यदि आप अपने में विश्वास नहीं करते है, यदि आप उस योग्यता में विश्वास नहीं करते हैं जो परमेश्वर ने आपके भीतर रखा है, आप स्वयं को कम आंकेंगे। आप किनारे की पंक्तिओं पर बैठे रहेंगे और अन्य लोगों को आपके स्थान पर परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल किए जाते देखेंगे।

परमेश्वर जानबूझकर संसार के कमज़ोर और मूर्ख बातों को चुनता है कि बुद्धिमानों को लज्जित करे, ताकि कोई भी अपनी देह में प्रशंसा पाने या घमण्ड करने का कारण न प्राप्त कर सकें। (1 कुरिन्थियों 1:27-29)

परमेश्वर आपकी कमज़ोरियों के प्रति उतना चिंतित नहीं है जितना आप है। गिनती 13 में भेदियों के साथ समस्या यह थी कि उन्होंने परमेश्वर को देखने के बजाए राक्षस को देखा। हाँ, उस देश में राक्षस थे, परंतु इस्त्राएलियों को परमेश्वर की ओर देखने की ज़रूरत थी न कि राक्षसों की ओर।

मेरे जीवन में कुछ राक्षस है। परंतु मुझे उन राक्षसों की ओर देखने की ज़रूरत नहीं मुझे परमेश्वर की ओर देखने की ज़रूरत है। मुझे अपनी दृष्टि को दृढ़ता के साथ परमेश्वर की ओर लगाने और विश्वास करने की ज़रूरत है कि वह सब कुछ कर सकता है जो उसके विषय में कहता है कि वह कर सकता है।

यही बात आपके लिए भी सत्य है। आपकी आत्मा आपके जीवन में बहुत सी बातें उत्पन्न करना चाहती है। परंतु यदि आप हमेशा उस आत्मा को मनुष्यों के नकारात्मक स्वभाव, विचारों और शब्दों के द्वारा नीचे दबाते रहेंगे, वह कभी भी आपको उस स्थान तक नहीं उठा पाएगा जहाँ परमेश्वर

चाहता है कि आप पहुँचे, उस प्रदेश में जो वह चाहता है कि आप अपने अधिकार में करें।

परमेश्वर मृतक को जीवन देता है

> जैसा लिखा है, "मैं ने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है" उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया, और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं।
>
> रोमियों 4:17

अब्राहम जानता था कि यह कोई पाप नहीं है या कुछ ऐसा है यदि यह परमेश्वर के वचन के अनुरूप है।

अब्राहम के संतान उत्पन्न होने के पहले ही परमेश्वर ने उससे कहा था कि उसे बहुत से राष्ट्रों का पिता बनना है। फिर भी ये कैसे होता? अब्राहम एक वृद्ध पुरुष था और उसकी पत्नी सारा बाँझ थी।

परंतु परमेश्वर "मृतकों को जीवन देता है।" परंतु उसने सारा के मृतक कोक, को जगाने और अब्राहम के मृत शरीर में हलचल पैदा करने के द्वारा यह प्रमाणित किया। और परमेश्वर "बिना अस्तित्व वाले बातों को कहता है, मानों वे अस्तित्व में हों।"

इस वचन पर आधारित होकर हमें अपने मुँह को हर उस बात के अनुरूप करना है जो परमेश्वर ने अपने वचन में प्रतिज्ञा की है। इसका ये तात्पर्य नहीं कि हमें चारों तरफ़ घूमकर हर उस बात को कहना है जो हम

चाहते हैं। हमें केवल उन बातों को कहना चाहिए जिनकी प्रतिज्ञा हमें परमेश्वर के वचन से की गई है।

वचन का अंगीकार करना परिणाम लाता है

तो तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

नीतिवचन 3:4

मेरे जीवन में बहुत बड़ी समस्याएँ हुआ करती थी। अब मैं विजय में चलती हूँ, क्योंकि परमेश्वर के वचन ने मेरे जीवन में काम किया है। परंतु ऐसा नहीं है कि एक सुबह अचानक बिस्तर से उतरी और मैंने संपूर्ण विजय का अनुभव करना प्रारंभ कर दिया हो। न ही मैं अचानक एक सभा में एक दिन हर तीन हफ़्ते में एक बार जाती और एक टेप को सुनती। जब से मैं पवित्र आत्मा में बप्तिस्मा पाई हूँ तब से मैंने परमेश्वर के वचन के साथ नाक रगड़ा है। मैं अपने जीवन में लगातार परमेश्वर के वचन को महिमा देने के द्वारा विजय का अनुभव करने लगी।

मैं कृपा की अपेक्षा करती हूँ क्योंकि मैंने लंबे समय तक अपने प्रति कृपा के वचनों को उद्घृत किया है। बाइबल लगातार कहती है कि हमने परमेश्वर के वचन की कृपा प्राप्त की है और वह हमें लोगों के सामने भी कृपा का पात्र बनाएगा। मैं मनुष्यों से कृपा पाने की अपेक्षा करती हूँ, यह एक बुरा और घमण्डी स्वभाव नहीं है; यह गलत भी नहीं है। क्यों? क्योंकि बाइबल में यह मेरे लिए एक प्रतिज्ञा है।

परमेश्वर का वचन आपके विषय में क्या कहता है यदि आप उसे अपने विषय में कहते हैं। आप सकारात्मक परिणाम पाएँगे परंतु इसमें समय और प्रयास लगेगा।

जब परमेश्वर ने पहली बार वे बातें सिखाना प्रारंभ किया जिन्हें मैं इस पुस्तक में आपके साथ बाँट रही हूँ तो मुझे एक वज़न की समस्या थी। मैं हमेशा बीस या पच्चीस पौण्ड अतिरिक्त वजन रखती थी। मैं एक पूर्ण लंबाई के आईने के सामने खड़े होना और अपने आपको देखना और यह कहना याद करती हूँ, "मैं सही खाती हूँ, मैं अच्छी दिखती हूँ, मैं अच्छा महसूस करती हूँ और मेरा वज़न एक सौ पैंतीस पौण्ड हैं।"

उस समय इनमें से *कोई* भी बात सही नहीं थी, मैं सही खाती नहीं थी, मैं अच्छी नहीं दिखती थी, मैं अच्छा महसूस नहीं करती थी, और *निश्चय* ही मेरा वज़न एक सौ पैंतीस पौण्ड नहीं था। परंतु मैंने महसूस किया कि यह मेरे लिए एक अच्छा वज़न है, इसलिए मैंने इसे अपने आपसे अंगीकार करना प्रारंभ किया।

मैं लोगों के कंधे पे थपथपा के यह कहती नहीं फिरी, "देखो! मैं अच्छी दिखती हूँ, मैं अच्छा महसूस करती हूँ, मैं अच्छा भोजन करती हूँ, और मेरा वज़न एक सौ पैंतीस पौण्ड है।" ये मेरे विषय में निजी अंगीकार थे जिन्हें मैंने अपने विषय में किया था।

जैसा मुँह चलता है, वैसा जीवन भी चलता है

> इसलिये कि हम सब बहुत बार चूक जाते है; जो कोई वचन में नहीं चूकता वही तो सिद्ध मनुष्य है; और सारी देह पर भी लगाम लगा सकता है।
>
> याकूब 3:2

परमेश्वर के वचन का सकारात्मक अंगीकार निश्चय ही प्रत्येक विश्वासी की एक आंतरिक या स्वभाविक आदत होनी चाहिए।

यदि आपने अभी तक इस महत्वपूर्ण स्वभाव को विकसित नहीं किया है आज ही प्रारंभ कीजिए। अपने विषय में अच्छी बातें सोचना और बोलना प्रारंभ कीजिएः "मैं यीशु मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता हूँ। जिस किसी चीज़ पर मैं हाथ रखता हूँ उसमें मैं समृद्ध होता हूँ। मेरे पास वरदान और योग्यताएँ हैं और परमेश्वर इस्तेमाल कर रहा है। मैं आत्मा के फलों में कार्य करता हूँ, मैं प्रेम में चलता हूँ, आनंद मुझसे बह निकलता है, मैं सही भोजन करता हूँ, मैं अच्छा दिखता हूँ, मैं अच्छा महसूस करता हूँ, मेरा वज़न उतना ही है जितना होना चाहिए।"

यद्यपि परमेश्वर हमारी सहायता करना चाहता है, बाइबल हमें सिखाती है कि हम अपने मुँह को सही करने के द्वारा अपने जीवन को सही करते हैं। यह सिखाता है कि हम अपने जीवन में परमेश्वर की आशीषों की प्रशंसा, विश्वास करने और सकारात्मक बातों का अंगीकार करने के द्वारा कर सकते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने वचन में हमारे विषय में कहा हैं।

3

तुलना करने से बचें

असुरक्षा पर विजय पाने का अगला कदम सरल है। *कभी भी अपनी तुलना किसी से न करें।*

यदि आपमें आत्मविश्वास की कमी है, यह एक महत्वपूर्ण विषय है। आप सोचते होंगे कि आप पूरी रीति से सही हैं जब तक आप अपने आस-पास किसी और को नहीं देख लेते जो उसी कार्य को थोड़े अच्छे से कर रहे दिखते है जो आप कर रहे होते हैं।

उदाहरण के लिए, प्रार्थना को लीजिए। बहुत बार परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध दोषी ठहरने का श्रोत हो सकता हैं। किसी और के साथ तुलना करने पर आप महसूस कर सकते हैं कि आप लंबे समय तक प्रार्थना नहीं कर सकते हैं। अच्छे से या "आत्मिक" रूप से नहीं करते हैं।

तुलना दोषभावना को आमंत्रित करता है

तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के सामने अपने ही मन में रख! धन्य है वह जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता।

रोमियों 14:22

मेरे जीवन में एक समय था जब मैं एक दिन मैं आधा घण्टा प्रार्थना कर रही थी। जो कुछ मैं कर रही थी उसमें मैं प्रसन्न थी क्योंकि मुझ पर प्रत्येक दिन तीस मिनट प्रार्थना करने का एक अभिषेक था। मैं सिद्ध रूप से संतुष्ट और संतृप्त और प्रभु के साथ अपने आधा घण्टा दैनिक संगति से संतृप्त थी।

तब एक दिन मैंने एक सेवक को प्रचार करते हुए सुना कि वे कैसे प्रति दिन चार घण्टे प्रार्थना किया करते थे और इसे करने के लिए कुछ मुश्किल घण्टे में उठ जाया करते थे (कम से कम यह मुझे मुश्किल घड़ी लगती थी। मैं सोचती हूँ कि उसने सुबह चार या पाँच बजे प्रार्थना का समय चुना होगा।) जब मैंने उनके साथ अपनी तुलना की तो मैंने अपने आपको बहुत निकृष्ट महसूस किया यद्यपि मैं ईमानदारीपूर्वक और सच्चाई के साथ अपने प्रार्थना जीवन के विषय में अब तक प्रसन्न थी। उस संदेश को सुनने के पश्चात मैंने मसहूस किया कि शायद ही मैं परमेश्वर से प्रेम भी करती हूँ।

कभी-कभी मैं लोगों को प्रचार करते हुए सुनती हूँ कि किस प्रकार परमेश्वर उनको रात्रि के मध्य में प्रार्थना करने के लिए उठा देता है। मैं सोचती, "प्रभु मेरे साथ क्या समस्या है? मैं बिस्तर पर जाकर सो जाती हूँ!"

मैं क्यों दोषभावना के अधीन हूँ? क्योंकि मैं सचमुच में इस बात में सुरक्षित नहीं थी कि मैं मसीह में कौन थी।

एक सेवक के रूप में मैंने सतर्क रहना सीखा है कि मैं क्या बोलती हूँ, क्योंकि बहुत से अधिक लोग जिनको मैं प्रचार करती हूँ वे सुरक्षित नहीं है। एक खतरा है कि वे मेरी गवाही को लेते और अपनी तुलना मुझ से करते। इसलिए अधिकतर भाग में मैं कितना प्रार्थना करती हूँ और किस विषय में प्रार्थना करती हूँ और कैसे प्रार्थना करती हूँ इन बातों को मैं अपने तक सीमित रखती हूँ।

हम सब अद्वितीय हैं

> जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहणयोग्य ठहरता है।
>
> रोमियों 14:18

हम अपने विषय में तब तक पूरी रीति से अच्छा महसूस कर सकते हैं जब तक हम अपनी तुलना दूसरों के साथ करना प्रारंभ नहीं करते हैं। तब अचानक हम सोचने लगते हैं कि हम दुर्दशा में पड़े हुए हैं।

मैं सचमुच में आपको प्रोत्साहित करना चाहती हूँ कि दूसरे लोगों के साथ अपनी तुलना करना बंद करें: दूसरे लोग कैसे दिखते हैं उसकी तुलना में आप कैसे दिखते हैं, दूसरें लोगों की तुलना में आप किस पद पर हैं, दूसरे लोगों की तुलना में आप कितनी देर तक प्रार्थना करते हैं, दूसरे लोगों की तुलना में आप कितनी बार भविष्यवाणी करते हैं।

उसी प्रकार, आप अपने क्लेशों की तुलना दूसरों के क्लेशों से नहीं कर सकते हैं। आप अपने दुःख की तुलना दूसरों के दुःख से नहीं कर

सकते हैं। कुछ परिस्थितियाँ आपके लिए कठोर लग सकती हैं, परंतु आप किसी और की ओर देख कर यह नहीं कह सकते हैं। "यह सब कुछ मेरे साथ क्यों हो रहा है और सारे गुलाब के फूल तुम्हें ही क्यों मिल रहें हैं?"

उदाहरण के लिए, शायद एक ही पड़ोस की दो जवान युवतियों ने नया जन्म प्राप्त किया। दस वर्ष पश्चात वे दोनों ही अपने पतियों के उद्धार के लिए विश्वास करती है, परंतु दोनों बचाए नहीं गए। तब एक महिला गली के उस पार रहनेवाली नया जन्म प्राप्त करती है वह अपने पति के लिए परमेश्वर पर विश्वास करती है कि वह बचाए जाएँगे और दो सप्ताह पश्चात वह नया जन्म प्राप्त करते हैं, आत्मा से भर जाते हैं और संसारभर में प्रचार करने के लिए तैयार होते है।

परमेश्वर जानता है कि वह क्या कर रहा है

> क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की है, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा।
>
> यिर्मयाह 29:11

यदि आप नहीं समझते हैं कि परमेश्वर ने आपके लिए एक व्यक्तिगत योजना रखी है, तो आप चारों ओर देखना और अन्य लोगों के साथ अपनी तुलना करना प्रारंभ करेगे और कहेंगे, "मेरे साथ क्या गलत है? मैं दस वर्षों से प्रार्थना करती रहीं हूँ और कुछ भी उत्तर नहीं मिला है? तुम दो हफ़्तों से प्रार्थना कर रहीं हो और देखो परमेश्वर ने तुम्हारें लिए क्या किया है?"

लोग मुझ से हर समय कहते रहते हैं कि वे कैसे कलीसिया में कार्य करते हैं, दसवांश देते है, परमेश्वर से प्रेम करते हैं और भरसक प्रयास करते

हैं जितना कि वे जानते हैं। फिर भी ऐसा दिखता है कि उनके लिए कोई भी भला परिणाम नहीं निकलता है जबकि चारों ओर अन्य लोग अपनी उन सभी बातों को प्राप्त करते हैं जैसी उनकी अभिलाषा है। ऐसा क्यों हैं?

इस प्रश्न का मेरे पास एक सीधा सीधा उत्तर नहीं है, परंतु मैं यह जानती हूँ: हमें हर वो सब चीज़ से ऊपर विश्वास करना है कि परमेश्वर जानता है कि वह क्या कर रहा है। इस विश्वास के साथ जो शांति आती है वह आश्चर्यजनक हैं।

विश्वास से चलना, देख कर नहीं

क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
2 कुरिन्थियों 5:7

कभी कभी जब लोग अपने जीवन में बुलाहट प्राप्त करते हैं तो वे ऐसी बातों से होकर गुज़रते हैं जो अन्य लोग नहीं गुज़रते हैं।

इन बातों के कारण जिन से होकर मैं चार या पाँच वर्षों के एक विशेष दौर से गुज़री, मेरे हृदय में पीड़ित लोगों के लिए एक गहरी और हार्दिक समझ और सहानुभूति है, जब वे मेरे पास सेवकाई के लिए आते हैं। कुछ ऐसी बातें होती हैं जो हाथ रखने के द्वारा नहीं होती हैं वे व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा ही प्राप्त होती हैं। मेरे अनुभव ने मेरी सेवकाई की तैयारी में मेरी सहायता की।

मेरे सेवकाई के प्रारंभ में मैं रो पड़ती, "क्यों परमेश्वर क्यों? मैं तुझ पर विश्वास करती हूँ। मैं नहीं समझती कि यह मेरे साथ क्यों हो रहा है।"

बहुत बार हम कुछ बातें तब तक नहीं समझते हैं जब तक हम उसके दूसरे किनारे पर न पहुँच जाएँ। जब यह सब कुछ हो चुका होता है तब

हम विजय में आनंदित होते हैं। शायद एक साल या अधिक का अनुभव खत्म होने के पश्चात, हमारी आँखें खुलती है और हम कहने के योग्य होते हैं, "अब मैं समझता हूँ।"

या हम कभी नहीं समझते हैं। परंतु जब हम परमेश्वर पर भरोसा रखना सीखते हैं चाहे हम समझते नहीं हैं, हमारा विश्वास बढ़ेगा।

तुलना मत करो अनुसरण करो

> उसने इन बातों से संकेत दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा। और तब उसने उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले!"
>
> पतरस ने मुड़कर उस चेले को पीछे आते देखा, जिससे यीशु प्रेम रखता था, और जिसने भोजन के समय उसकी छाती की ओर झुककर पूछा था, "हे प्रभु, तेरा पकड़वानेवाला कौन है?" उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, इसका क्या हाल होगा?"
>
> यूहन्ना 21:19-21

जिस प्रकार हमें अपने वरदानों और योग्यताओं की तुलना अन्य लोगों की योग्यताओं और वरदानों से करने से बचना चाहिए। उसी प्रकार हमें अपनी परीक्षाओं और क्लेशों की तुलना दूसरों की परीक्षाओं और क्लेशों से नहीं करना चाहिए।

यीशु ने समय से पहले कुछ दुःखों को पतरस पर प्रगट किया जिनमें से होकर वह गुज़रनेवाला था। तुरंत ही पतरस अपने दुःखों और जीवन के उन दिनों की तुलना किसी और से करते हुए कहा, "इस मनुष्य के विषय में क्या है?"

यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहें, तो तुझे इससे क्या? तू मेरे पीछे हो ले!" (यूहन्ना 21:22)

हमारे लिए भी उसका उत्तर यही है। हमें तुलना करने के लिए नहीं बुलाया गया है केवल पूरा करने के लिए।

दूसरों की आशीषों का लालच मत करो

तू ...लालच न करना...

निर्गमन 20:17

जब आप एक कठिन दौर से गुज़रते हैं कभी भी दूसरों की ओर देखखर यह न कहिए, "परमेश्वर मुझे समझ में नहीं आता। मैं ऐसे कठिन दौर से क्यों गुज़र रहा हूँ, जबकि वे लोग बहुत आशीषित दिखाई देते है?" इस प्रकार का प्रश्न केवल यातना ही लाता है। क्यों? क्योंकि यह लालच का एक चिन्ह हैं।

जब आपके भाई या बहन आशीषित होते हैं तब उनके लिए आनंदित होइए। वे जब पीड़ित होते हैं तब उनके साथ उनकी वेदना को बाँटिए (रोमियों 12:15)। परंतु अपनी तुलना दूसरों से मत कीजिए। इसके बजाए परमेश्वर पर भरोसा रखिए। विश्वास कीजिए कि आपके जीवन के लिए उसके पास एक विशेष, व्यक्तिगत योजना है। इस ज्ञान में सुरक्षित होइए कि आपके साथ चाहे कुछ भी घट रहा हो या क्षणभर के लिए वे कैसा प्रतीत होता है, वह आपकी बहुत अधिक चिंता करता है और वह भलाई के लिए सबकुछ करता है। (1 पतरस 5:7; रोमियों 8:28)

4

संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करें, सीमाओं पर नहीं

स्वयं के होने में किस प्रकार से सफल होना है, किस प्रकार से आत्मविश्वास का निर्माण करना और असुरक्षा पर विजय पाना इस पर ये चौथा विषय है: *सीमाओं के बजाए सामर्थ या संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करें।* दूसरे शब्दों में अपने सामर्थ पर ध्यान केंद्रित करें बजाए कि अपनी कमज़ोरियों पर।

संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करना

> जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न वरदान मिले हैं...
>
> रोमियों 12:6

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री हेलेन हैयज़ केवल पाँच फुट लंबी थी। अपने करियर के प्रारंभिक दिनों में उससे कहा गया, कि यदि वह चार इंच और लंबी होती तो वह एक महान अभिनेत्री बन सकती थी। यद्यपि वह सचमुच में अपनी लंबाई को बढ़ा नहीं पाई उसने अपने हावभाव और रूप रंग को विकसित करने में और उन्नत करने में परिश्रम किया, लंबे खड़े होने के लिए ताकि मंच पर लंबी दिख सके।

इस सत्य पर ध्यान केंद्रित करने के बजाए की वह केवल पाँच फुट लंबी है उसने अपने महान अभिनय क्षमता पर ध्यान देना शुरू किया और उसने हार नहीं मानी। अपने जीवन में बाद में, वह मेरी स्कॉटस की रानी जो सबसे लंबी रानी थी उसका अभिनय करने के लिए चुनी गई।

अपने सिमाओं के बजाए अपने सामर्थ पर ध्यान केंद्रित करें।

आप वह सब कर सकते हैं जो परमेश्वर ने आपको करने के लिए बुलाया है

जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।
फिलिप्पियों 4:13

हाल ही में मैंने एक कलीसिया पर एक संकेत बोर्ड़ देखा जिसमें लिखा था, "परमेश्वर पर भरोसा रखों, अपने आप में विश्वास करो और आप सब कुछ कर सकते हैं।" वह सही नहीं है।

मेरे जीवन में एक ऐसा समय था जब मैं इसे देखती और कहती, "आमीन!" परंतु अब ऐसा नहीं है। मैं और आप सचमुच में वह सब नहीं कर सकते हैं जो हम करना चाहते हैं। कुछ भी या सब कुछ नहीं कर सकते

हैं जो हर कोई करता है। परंतु हम वह सब कर सकते हैं जो परमेश्वर ने हमसे करने के लिए कहा है। और हम वह सब हो सकते हैं जो परमेश्वर हमसे होने के लिए कहता है।

हमें इस क्षेत्र में संतुलन अवश्य बनाना चाहिए। हम प्रेरणादायक सम्मेलनों में जा सकते हैं और बहुत सारी भावनात्मक बातें हम से कही जा सकती है। "आप कुछ भी कर सकते हैं। आप सोचिए कि आप कर सकते है; विश्वास कीजिए कि आप कर सकते हैं; कहिए कि आप कर सकते–और आप कर सकते!" यह कुछ अंश तक ही सही हैं। इसे बहुत आगे तक ले जाने से, यह मानवीयकरण हो जाता है। हमें अपने विषय में वह कहने की ज़रूरत है जो *वचन* हमारे विषय में *कहता* है।

हम वह कर सकते हैं जो हमें करने के लिए *बुलाया* गया है, जिसे करने के लिए हमें वरदान दिया गया है। बहुत से ऐसे रास्ते हैं जहाँ हम अनुग्रहकारी वरदानों को पहचानना सीख सकते हैं जो हमारे जीवन पर हैं।

मैंने इसे अपने विषय में सीखा हैः जब मैं निराश होना प्रारंभ करती हूँ, मैं जानती हूँ यह एक चिन्ह है कि या तो मैं अपने काम में अति व्यस्त हो गई हूँ या तो परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त नहीं कर रही हूँ या मैं कुछ ऐसा करने का प्रयास कर रही हूँ जिसे प्रारंभ करने के लिए अनुग्रह नहीं है।

परमेश्वर के अनुग्रह को निराश न करो

मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता...

गलातियों 2:21

परमेश्वर ने हमें निराश होने के लिए नहीं बुलाया है।

हममें से प्रत्येक वरदानों और सामर्थ और योग्यताओं से भरे हुए हैं। यदि हम सचमुच में परमेश्वर के साथ सहयोग करना प्रारंभ करते हैं हम उस उत्तम को कर सकते हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है। परंतु यदि हम उच्च विचारों को रखते हैं और ऐसे लक्ष्यों को निर्धारित करते हैं जो हमारी योग्यताओं और उस अनुग्रह से बाहर है जो परमेश्वर ने हमारे जीवन में दिया है, हम निराश हो जाते हैं। हम उन चीज़ों को प्राप्त नहीं करेंगे और हो सकता है हम अपने पराजय के लिए परमेश्वर पर दोष लगाएँगे।

मसीह में सबकुछ के लिए सामर्थ है

जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।

फिलिप्पियों 4:13

यदि हम बाइबल के इस वचन को ध्यान दें, यह निश्चय ही ऐसा दिखता है कि हम सब कुछ करने के योग्य होंगे जो हम करना चाहते हैं। है ना? यदि हम इन पदों को लें जो हम चाहते हैं तो हम बाइबल को ऐसा बना सकते हैं कि वह सबकुछ कहता है जो हम कहना चाहते हैं। परंतु आइए हम इसे संदर्भ में पढ़े और देखें कि इसका वास्तविक अर्थ क्या है। पद 10 से प्रारंभ करें:

मैं प्रभु में बहुत आनंदित हूँ कि अब इतने दिनों के बाद तुम्हारी चिन्ता मेरे विषय में फिर जागृत हुई है; निश्चय तुम्हें आरंभ न मिला।

फिलिप्पी की कलीसिया के लोगों ने पौलुस को एक भेंट भेजी थी, जो उसे भा गया। वह यह कहने के लिए लिख रहा था, "मित्र मुझे खुशी है

कि आपने मुझ में रुचि बहुत समय पश्चात दिखाई।" और वह आगे 11 और 12 पदों में कहता है:

> यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूँ; क्योंकि मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूँ; उसी में संतोष करूँ।
>
> मैं जानता हूँ कि किस प्रकार से स्थिर होना विपरित परिस्थिति के साथ जिया जा सकता है।
>
> (इसका तात्पर्य है कि ऐसे समय थे जब पौलुस के पास वह सबकुछ नहीं था जो वह चाहता था। ऐसे समय थे जो उसके परिस्थितियाँ उस प्रकार से नहीं थे जैसा वह चाहता था)
>
> मैं दीन होना भी जानता हूँ और बढ़ना भी जानता हूँ; हर एक बात और सब दशाओं में मैंने तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना-घटना सीखा है।

पौलुस का संदेश यह नहीं था कि वह सब कुछ कर सकता है जिस पर वह मन लगाता है, परंतु यह कि उसने इस भेद को सीखा है कि वह जिस किसी परिस्थिति में अपने आपको पाता है उसका श्रेष्ठ उपयोग कैसे कर सकता है। इसी संदर्भ में वह यह कथन कहता है, जिसे अक्सर योग्यता के विषय में उल्लेख किया जाता है कि, "मसीह में सबकुछ करो।"

"सबकुछ करने की सच्चाई"

> जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।
>
> फिलिप्पियों 4:13

जब हम पद 13 को संदर्भ में पढ़ते हैं हम समझते हैं कि पौलुस वास्तव में क्या कह रहा है: "परमेश्वर ने वास्तव में मेरे जीवन में एक कार्य किया

है। मैंने शांति के साथ रहने के भेद को सीख लिया है चाहे मेरे पास वह सबकुछ हो या ना हो जो मैं चाहता हूँ। यदि मेरी परिस्थितियाँ उत्तेजक हैं तो मैं जानता हूँ कि उस परिस्थिति में कैसा व्यवहार करूँ और नम्र रहूँ। यदि मेरी परिस्थितियाँ अच्छी नहीं है तो मेरे पास आत्मिक सामर्थ है कि उस परिस्थिति में भी व्यवहार करूँ। मैं मसीह के साथ हर एक विभिन्न परिस्थितियों के साथ व्यवहार करने के योग्य हूँ जो मुझे सामर्थ देता है।"

यदि फिलिप्पियों 4:13 को हम संदर्भ से बाहर निकाल दें, हम विश्वास कर सकते हैं कि हम हर वह कार्य कर सकते हैं जो हम महसूस करते हैं, और हर उस समय पर जब हम चाहते हैं, कहीं भी जहाँ हम चाहते हैं। यह सत्य नहीं है। हमें अवश्य ही अभिषेक के साथ रहना चाहिए, जो केवल परमेश्वर की इच्छा के साथ आता है।

अभिषेक के साथ ठहरिए

> और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिसने हमारा अभिषेक किया वही परमेश्वर है।
>
> 2 कुरिन्थियों 1:21

आपने अपने जीवन में गहरे भ्रम का अनुभव किया होगा कुछ ऐसा करने के प्रयास के दौरान जिसे परमेश्वर ने पवित्र नहीं किया है और आपको अभिषेक नहीं किया है। आपने सोचा कि यह परमेश्वर की इच्छा है, तब पाया कि यह नहीं हैं। यदि ऐसा है तो, आप केवल ऐसे व्यक्ति नहीं है जिसने ऐसा किया हो। मैंने यही कार्य किया है और बहुत से अन्य लोगों ने भी। परंतु तब आप कैसे समझेंगे कि कोई बात सचमुच में परमेश्वर की है?

यदि आप विश्वास करते है कि सचमुच में परमेश्वर ने आपसे कुछ कहा है तो उसका एक वचन का आधार होता है। और आपने सचुमच में इस विषय में शांति पाई है तो उस पर बढ़िए। परंतु यदि आप पाते हैं कि आप चाहे कुछ भी करें कुछ भी नहीं होगा, तो अपने जीवन को अपने सिर को ईंटों के दिवार पर टकराते हुए व्यतीत मत कीजिए कि किसी ऐसी चीज़ को करने के लिए दबाव बनाए जिसमें परमेश्वर आपकी सहायता नहीं कर रहा है। यदि अभिषेक नहीं है तो, यह कभी कार्य नहीं करेगा।

कुछ लोग अपने पूरे जीवन को मृत घोड़े की सवारी करने में व्यतीत करते हैं। मैंने किसी को इस प्रकार से हाल ही में कहते सुना, "घोड़ा तो सात साल पहले मर गया था–अब उसे दफ़नाने का समय आ गया है।"

आप अपना भाग कीजिए। आप जो विश्वास करते हैं कि सही है उसे कीजिए, अपनी योग्यता में भरसक परमेश्वर की अगुवाई का अनुसरण कीजिए, और तब परिणाम को उसके हाथ में छोड़ दीजिए। इस प्रकार से आप वह सबकुछ कर रहे है, जो आप कर सकते है परंतु जो आप नहीं कर सकते हैं, उसे करने के प्रयास में आप अपना जीवन व्यतीत नहीं कर रहें है, जो परमेश्वर का भाग है।

इसे परमेश्वर के हाथ में छोड़ दीजिए

...और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।

इफिसियों 6:13

स्मरण कीजिए, कि परमेश्वर ने आपको कुछ करने के लिए बुलाया है, आप अपना भाग कीजिए और खड़े रहिए। जब आप वह सबकुछ कर चुके हैं जो आप कर सकते हैं, परिस्थिति को परमेश्वर के हाथ में छोड़ दीजिए

और तब अपने कार्य कीजिए। यदि वह अपना भाग नहीं करता है, तब समय नहीं आया है, यह सही नहीं है या यह आपके लिए नहीं है।

लोग अक्सर मुझ से पूछते हैं, "जो आप कर रहे है वह मैं कैसे कर सकता हूँ? परमेश्वर ने मुझे आपके समान प्रचार करने के लिए बुलाया है। मुझे बताइए कि आपने कैसे प्रारंभ किया" मैं उनसे कहती हूँ, "यह उतना आसान नहीं है। मैं केवल आपको तीन सरल पाठ दे नहीं सकती हूँ कि कैसे सेवकाई को प्रारंभ किया जाएँ। परंतु यदि परमेश्वर आपको बुलाता है, वह द्वारों को खोलता है। वह आपको प्रशिक्षण देता है, तैयार करता है, धन का प्रबंध करता है, आप पर कृपा करता है, और यह होने देता है।"

यह स्वीकार करना सही है कि आप उसी प्रकार की एक सेवकाई करने या पाने जाने रहे हैं जो दूसरे व्यक्ति के पास भी है यदि आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने ऐसा करने के लिए आप से कहा हैं। इस बात को सुनिश्चित कीजिए कि यह अंगीकार आपके घर के निजता में हो सार्वजनिक रूप से नहीं। इसे तब तक अपने और परमेश्वर के बीच में मुख्य रूप से रखिए जब तक परमेश्वर इसे सार्वजनिक नहीं करता है। यदि यह इच्छा परमेश्वर की है तो आप इसे पूरा होते हुए देखेंगे। परंतु यह परमेश्वर की ओर से नहीं है और कुछ नहीं होता है तो यह आपके अपने स्वयं की मूल्य भावना को प्रभावित नहीं करना चाहिए।

आपको स्वयं में विश्वास करना है। किसी और की ओर देखना ठीक है जो अपनी सेवकाई में या व्यवसाय में सफल है और यह कहना कि, "मैं विश्वास करता हूँ कि यदि परमेश्वर मुझे उस पद पर देखना चाहता है, तो मुझे उसके योग्य बनाएगा। मुझमें योग्यता है, और मुझमें सामर्थ है।" इस बात को सुनिश्चित कीजिए कि यह आपके लिए परमेश्वर की इच्छा है और

आपके स्वयं की इच्छा स्वार्थी इच्छा नहीं है। यदि यह परमेश्वर की इच्छा है, तो आप इसमें आनंद पाएँगे।

प्रेम से कार्य कीजिए और अपने काम से प्रेम कीजिए!

यदि परमेश्वर ने आपको कुछ करने के लिए बुलाया, है तो आप स्वयं को उससे प्रेम करते हुए पाएँगे चाहे आपके विरोध में कुछ भी हो।

कभी-कभी डेव और मुझे कुछ स्थानों को छोड़ देना पड़ता है सवेरे तीन बजे केवल तीन घण्टों की नींद लेकर। अक्सर मुझे वैन के पिछली सीट पर सोना पड़ता है–और यह मानों ऐसा होता है कि घुड़ सवारी करते हुए सोने का प्रयास करना। कुछ स्नान-घर जिनका हमें इस्तेमाल करना पड़ता है जब हम सड़क पर होते हैं जो बहुत अच्छे नहीं होते हैं। कुछ भोजन-गृह जहाँ हम भोजन करते हैं जो बहुत अच्छे नहीं होते, हमारे कुछ होटल का निवास अजीब सा होता है, और मैं सुबह यह महसूस करते हुए उठती हूँ कि मानों मैं सौ साल की बुढ़िया हो गई हूँ। कभी-कभी मुझे होटल में अपने बिस्तर पर भी अध्ययन करना पड़ता है क्योंकि वहाँ पर कोई मेज़ कुर्सी नहीं होती है।

पौलुस के समान, मैं और मेरे पति बार-बार अनिच्छुक परिस्थिति का सामना करते है। परंतु जो मैं करती हूँ उससे मैं प्रेम करती हूँ। मैं उसे कैसे प्रेम कर सकती थी यदि वह परमेश्वर की ओर से नहीं होता? कई कठिनाइयों और असुविधा के बावजूद, हम संसार भर में यात्रा करना और प्रभु का कार्य करने का आनंद उठाते हैं।

यदि परमेश्वर ने आपको कुछ करने के लिए बुलाया है, तो आपको वह करने के लिए योग्य बनाता है। यदि आप यह कहते हुए हर समय संघर्ष करते हैं, "मैं इससे घृणा करता हूँ," तो कुछ बात गलत है!

परमेश्वर पदोन्नति देता है

क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पश्चिम से, और न जंगल की ओर से आती है;

परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है।

भजन संहिता 75:6,7

अक्सर हम मनुष्य दूसरे लोगों से पूछते हैं, "आपका व्यवसाय क्या है?" जब वे उत्तर देते हैं कभी-कभी हम अपने स्वभाव के द्वारा इस बात को लागू करते हैं कि उन्हें एक उच्च पद पाने की इच्छा होनी चाहिए जिस पर वे अभी हैं उसे उस पद की इच्छा होनी चाहिए।

एक उच्च पद या पदोन्नति के लिए परमेश्वर पर विश्वास करना ठीक है परंतु जिस पद पर हम हैं उस में बने रहना भी तुल्य रूप से स्वीकारयोग्य है जिसमें हम हैं यदि हम महसूस करते हैं कि जहाँ हम हैं यह वही स्थान है जहाँ परमेश्वर हमें चाहता है।

एक पद को भरने और उस कार्य को करने के लिए परमेश्वर हमें इस प्राकृतिय संसार में योग्य बना सकता है, जिसके लिए हम योग्य नहीं है। परंतु कुछ असुरक्षित लोग भी होते हैं जो सोचते हैं कि वे उच्च पद के द्वारा योग्यता और मूल्य कमा सकते हैं। वे अपने आप बिना परमेश्वर के अगुवाई से बाहर निकल आते हैं, उनका लक्ष्य गलत होता है और वे अपने मुँह के बल गिर जाते हैं।

मैंने पाया है कि परमेश्वर हमें जो नहीं दे रहा है उस पद को पाने का प्रयास करना मूर्खता का कार्य है। हम देह में परिश्रम कर सकते हैं और

कार्य को होने दे सकते हैं, परंतु परिणाम से हम कभी भी संतुष्ट नहीं होंगे।

> इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।
>
> 1 पतरस 5:6

परमेश्वर हमारे जीवन में कार्य करता है जब वह जानता है कि हम सही में तैयार हैं। उच्च लक्ष्यों को निर्धारित कीजिए, परंतु आपके ध्यान को अपने कार्य को श्रेष्ठत्तम करने पर लगाए जहाँ आप हैं। यह जानकर कि यदि और जब परमेश्वर आपको पदोन्नति देना चाहता है वह निश्चय ही ऐसा करने के योग्य है।

योग्यता पर ध्यान केंद्रित कीजिए

> परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करता है, और जिसे जो चाहता है वह बाँट देता है।
>
> 1 कुरिन्थियों 12:11

वरदान और योग्यताएँ पवित्र आत्मा के द्वारा उस अनुग्रह के अनुसार बाँटा जाता है जो प्रत्येक व्यक्ति पर है कि वह उससे व्यवहार करें। परमेश्वर हमसे अप्रसन्न नहीं होता है यदि हमारे पास केवल एक ही वरदान है जबकि किसी अन्य के पास पाँच वरदान हैं। परंतु परमेश्वर यह पसंद नहीं करता है हम उस एक वरदान को भी विकसित नहीं करते हैं। (मत्ती 25:14-30)।

गिनती के पुस्तक में हम देखते हैं कि बारह भेदियों को प्रतिज्ञा देश में भेद लेने के लिए भेजा गया जिन्हें परमेश्वर द्वारा अधिकार में करने की

आज्ञा दी गई थी। उनमें से दस यह कहते हुए वापस आए, "वहाँ पर उस देश में बड़े राक्षस रहते हैं, इसलिए हम उस पर अधिकार नहीं कर सकते हैं।" परंतु उनमें से दो यह कहते हुए आए, "हाँ, वहाँ पर राक्षस रहते हैं, परंतु वे अपने अधिकार में करेंगे क्योंकि *परमेश्वर* ने हमें ऐसा करने के लिए कहा हैं।"

दस इब्री भेदियों ने अपनी सीमाओं को देखा और दो ने अपनी योग्यताओं को देखा। दस लोगों ने राक्षसों को देखा, परंतु दो लोगों ने परमेश्वर को देखा।

यदि आप स्वयं को पसंद करने जा रहें हैं, यदि आप स्वयं में सफल होने जा रहें हैं तो आपको अपने सामर्थ पर ध्यान केंद्रित करना है–परमेश्वर ने आपको जो होने के लिए बनाया है–न कि अपनी सीमाओं पर।

5

अपने वरदान का उपयोग कीजिए

असुरक्षा पर विजय पाने के लिये यह पाँचवा विषय हैः *कुछ ऐसा खोजिए जिसे आप करना पसंद करते हैं और उसे सही रीति से करते हैं,* तब उसे बार-बार करें। क्या आप जानते हैं कि इससे क्या होगा? आप सफल होना प्रारंभ करेंगे क्योंकि आप वह कर रहें होंगे जिसे करने के लिए आपने वरदान प्राप्त किया है। आप अपने में अच्छा महसूस करना प्रारंभ करेगें क्योंकि आप लगातार पराजित नहीं हो रहें होंगे।

अपने वरदान को निर्धारित कीजिए

> यदि (किसी को) सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे;
> यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे।
>
> रोमियों 12:7

वचन यह नहीं कहता है, "यदि आप एक शिक्षक हैं, सिखाइए परंतु उसी समय एक आराधना संचालक बनने का कठोर प्रयास भी कीजिए।"

मेरे जीवन में एक ऐसा समय भी था जब मैं अपने विषय में सचमुच में पागल थी क्योंकि मैं केवल सिखा ही सकती थी। मैं अन्य सारे काम करना चाहती थी जिन्हें मैं दूसरों को करते हुए देखती। मैंने संघर्ष किया और प्रार्थना किया और उन "बंधनों को तोड़ डाला।" मैंने शैतान से कहा, "मैं और अधिक करने जा रही हूँ!" परंतु मैं एक ऐसे स्थान पर आई जहाँ पर मुझे वचन का प्रचार करते हुए संतुष्ट होना पड़ा।

मैंने अपने जीवन का एक वर्ष टमाटर उगाने का प्रयास करते हुए और पति के कपड़ों को सीते हुए व्यतीत किया क्योंकि मेरी निकट पड़ोसन यही किया करती थी। मैंने अपनी तुलना उनसे की और इस निष्कर्ष पर पहुँची कि मेरे साथ कुछ समस्या है क्योंकि मैं एक "सामान्य" गृहिणी के समान अभिनय नहीं करती थी। खुलके कहूँ तो मैं टमाटर उगाना पसंद नहीं करती थी। मैं सच में टमाटर उगाना, पति के कपड़ों को सिलना पसंद नहीं करती थी। परंतु मैं यह सब कर रही थी क्योंकि मैं वह करने का प्रयास कर रही थी जो दूसरे कर रहें थे।

उस कार्य को मत करते रहिए जो आप ठीक रीति से नहीं करते हैं

यदि घर को यहोवा न बनाए, तो बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।
भजन संहिता 127:1

मैंने एक वर्ष कुछ ऐसा करते हुए व्यतीत किया जिसे मैं ठीक रीति से नहीं करती थी। दिन रात मैं लगातार पराजित होती रहती थी। मैं बहुत निराश हो गई थी। मैं दिनभर एक कमीज़ को सीते हुए बिता सकती थी, और तब अंततः उसके उल्टे तरफ बटन टाँक देती और घण्टों उसे निकालने में बिताया करती। मैंने लगातार पराजय को महसूस किया।

अपना सारा समय वह कार्य करने का प्रयास करते हुए मत बिताए जिसे करने में आप पारंगत नहीं है। इसके बजाए परमेश्वर को आपको दिखाने दीजिए कि आप किस कार्य में अच्छे हैं। सामान्यतः वे बातें जिसमें आप अच्छे हैं उसी में आप आनंद प्राप्त करने जा रहें हैं।

परमेश्वर हमें कुछ ऐसा करने के लिए नहीं कहेगा जिसे हम जीवनभर घृणा करते रहें हैं। हम हमेशा कुछ ऐसा करने का प्रयास क्यों करते हैं जिसे हम नहीं कर सकते हैं? क्यों न हम कोई ऐसा कार्य ढूँढे जिसे हम अच्छी रीति से करते हैं और उसे करें? यह आश्चर्यजनक हैं कि इसमें हमें कितना अच्छा महसूस होता है।

अभिषेक प्राप्त कीजिए

> परन्तु तुम्हारा वह (पवित्र नियुक्ति) अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया, तुम में (स्थायी रूप से) बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए।
>
> 1 यूहन्ना 2:27

सेवकाई में बहुत लोग वह कार्य करने का प्रयास करते हैं जिसे करने के लिए अभिषिक्त नहीं हैं, केवल इसलिए करना चाहते है कि दूसरे लोग करते हैं।

अपनी यात्राओं में, मैं देशभर में संघर्ष करनेवालें सेवकों को देखती हूँ। अक्सर कारण यह होता है कि वे कुछ ऐसा करने का प्रयास कर रहें होते हैं जिसे कोई अन्य कलीसिया या सेवकाई कर रही है, यद्यपि परमेश्वर ने उन्हें यह करने के लिए अभिषेक नहीं दिया है। वे महसूस करते हैं कि यदि वे दूसरों के समान कार्य नहीं करते हैं तो वे उस व्यक्ति के समान अच्छे नहीं हैं।

हम केवल वही कर सकते हैं जिसे करने के लिए परमेश्वर ने हमें वरदान और अभिषेक दिया है। यदि हम कुछ और करने का प्रयास करते हैं, तो हम लगातार दबाव महसूस करेंगे।

परमेश्वर के अनुग्रह के आगे मत बढ़िए

> यूहन्ना ने उत्तर दिया, "जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाये (वह कोई दावा नहीं कर सकता, वह अपने साथ कुछ नहीं ले सकता) तब तक वह कुछ नहीं पा सकता। (एक मनुष्य को अवश्य ही उस वरदान को पाने की आशा रखनी चाहिए जो उसे स्वर्ग से दिया जाता है; कोई और श्रोत नहीं है।)"
>
> यूहन्ना 3:27

एक मनुष्य कितना प्राप्त कर सकता है? एक मनुष्य कितना दावा कर सकता है? वह अपने साथ कितना ले जा सकता है? केवल उतना ही जितना उसे स्वर्ग से दिया जाए।

मसीहियों के रूप में हमें संतुष्ट होना हैं। यदि मैं कभी भी किसी और प्रचारक के समान प्रचार न कर सकूँ, फिर भी मैं अपने श्रेष्टतम प्रयास में संतुष्ट रहूँगी। यदि मेरी सेवकाई अमूक भाई या बहन की सेवकाई के समान बड़ी न हो फिर भी मुझे उसमें संतुष्ट होना है जो मेरे पास है।

आप और मैं अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के परे नहीं जा सकते हैं। हम परमेश्वर से केवल इसलिए एक उपहार या वरदान ही पा सकते हैं कि हमें वह चाहिए। पवित्र आत्मा अपनी इच्छा के अनुसार हमें वरदान देता है और हमें अवश्य ही उसमें संतुष्ट होना है जो हम उससे प्राप्त करते हैं।

कभी-कभी परमेश्वर हमें एक वरदान देना चाहता है, फिर भी उसका

समय नहीं आया होता है। जब तक परमेश्वर स्वर्ग से झुककर यह न कहे, "अब!" हम संघर्ष कर सकते हैं, आग बबूला हो सकते हैं, झगड़ा, शिकायत और लड़ सकते हैं, परंतु फिर भी हम उसे प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर जो हमें देने जा रहा है वह हम कब प्राप्त करेंगें? जब वह हमें देने हेतु तैयार होता है, हम उसे तब तक प्राप्त करने नहीं जा रहें है जब तक हम उस वस्तु के साथ संतुष्ट होना नहीं सीखते हैं। (इब्रानियों 13:5)। हमें स्मरण रखना चाहिए कि "पिता उत्तम जानता है!"

अपने वरदान का उपयोग कीजिए

> जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करें;
>
> यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे; यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे; जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे, जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करें
>
> रोमियों 12:6-8

आपका वरदान क्या है, इसकी कल्पना करते हुए समय बर्बाद मत कीजिए। जिस बात में आप अच्छे हैं उसे तुरंत ही करना प्रारंभ कर दीजिए।

मैं एक महिला को याद करती हूँ जो माईन शहर की एक कलीसिया में अगुवाई करती थी। वह एक उत्साह बढ़ानेवाली थी। जब मैंने अपना प्रचार समाप्त किया तो उसने मुझे घेर लिया और कहने लगी, ओह, "यहाँ आईए, यहाँ आईए" और वह मेरे लिए प्रार्थना करने लगी।

तब वह मुझसे बातें करने लगी, "ओह प्रिय, वह अदभुत था, वह अनोखा था, ओह, आप तो बहुत अभिषिक्त हैं।"

वह बोलती रही, जब मैं वहाँ से जाने लगी तब तक मैं बहुत अच्छा महसूस करने लगी थी मानों हवा में उड़ रही हूँ!

कभी-कभी मैं बहुत कठोर परिश्रम करती हूँ और आधे मुँह गिरा हुआ महसूस करती हूँ। तब कलीसिया के प्रोत्साहन करनेवाले आते हैं जितना अधिक वे मुझसे बातें करते हैं उतना ही मैं विश्वास करती हूँ कि मैं पुनः प्रारंभ करने के योग्य हूँ।

परन्तु एक प्रोत्साहित करने वाले से शैतान क्या कहता है? "यह कुछ नहीं, केवल यह कि आनन्दित रहो।" वह उस व्यक्ति से यह नहीं कहता कि प्रोत्साहित करना कलीसिया में एक महत्वपूर्ण सेवकाई है।

यदि आपके पास प्रोत्साहन करने का वरदान है, तो शैतान आपसे कहेगा कि आपको प्रचार करना या सिखाना या एक पास्टर बनना या एक कलीसिया का निर्माण करना चाहिए! परंतु बाइबल कहती है, कि यदि आपका वरदान प्रोत्साहित करना है तो प्रोत्साहित करना प्रारंभ कीजिए। यदि आप सिखाने के लिए हैं तो सिखाना प्रारंभ कीजिए। यदि आप सेवा करने के लिए है तो सेवा करना प्रारंभ कीजिए। यदि आप दूसरों की सहायता करने के लिए है, तो सहायता करना प्रारंभ कीजिए।

सहायताओं की सेवा

...दान देनेवाला उदारता से दे...

रोमियों 12:8

यदि आपको मसीह की देह में दान देना है तो इसे अपना व्यवसाय बनाइए। यदि परमेश्वर आपको एक दानकर्ता होने के लिए बुलाता है वह स्पष्टतः आपको यह करने का माध्यम भी देने जा रहा है।

वाक्यांश "दान देनेवाला" सहायता करनेवालों की ओर संकेत करता है। मसीह की देह में बहुत सारे लोग हैं जो सेवको के रूप में बुलाए गए है, ऐसे लोगों के रूप में जिनका कार्य किसी सेवकाई की सहायता करना है।

परमेश्वर सामर्थी अगुवों, लोगों को बुलाता हैं जिन पर वह अगुवाई हेतु सामर्थी अभिषेक देता है। यह बड़ी संख्या में लोगों का नेतृत्व करने का वरदान है जबकि बातों को क्रमबद्ध रखा जाए। यदि किसी व्यक्ति के पास यह करने का वरदान नहीं है, तो जल्द ही वह अपने आपको बड़ी समस्या में पाएगा।

परंतु चाहे वह पद के लिए वरदान प्राप्त हो, अगवा सबकुछ नहीं कर सकता है। इसलिए परमेश्वर अन्य लोगों को अभिषेक देता है कि उसकी सहायता करें, उसके हाथों को थामें, उसके लिए प्रार्थना करें। सहायता करने के लिए बुलाए गए और अभिषिक्त किए गए लोगों के बिना कोई भी किसी भी प्रकार की सफल सेवकाई का संचालन नहीं कर सकता।

यदि यह आपकी बुलाहट और अभिषेक है, तो अपने संपूर्ण शक्ति के साथ इसे कीजिए क्योंकि यह शुद्ध रूप से महत्वपूर्ण है।

कुछ लोग कहते है, "मैं तो केवल सहायता करता हूँ।" नहीं, वे *केवल* सहायता ही नहीं करते हैं। वे बाइबल की महान सेवकाइयों में से एक कर रहे हैं। कलीसिया की भी सेवकाई से अधिक, सहायता की सेवकाई में अधिक लोग हैं।

यदि आप विश्वास करते हैं कि आप सेवा करने की सेवकाई में बुलाए गए है, मैं आशा करती हूँ कि आप कभी अपमानित महसूस नहीं करेंगे कि "आप केवल सहायता की सेवकाई करते हैं।" अंततः यह पवित्र आत्मा की सेवकाई हैं।

पवित्रात्मा सहायक है

> मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक (परामर्शदाता, मध्यस्त, सामर्थ देनेवाला, और साथ में खड़ा होनेवाला) देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ है।
>
> यूहन्ना 14:16

सहायता करने की सेवकाई एक अद्‌भुत, अनोखी, और सामर्थी सेवकाई है। पवित्र आत्मा सहायता की सेवकाई में है। वह इसकी अगुवाई करता है, वह सहायक है, वही है जो प्रत्येक विश्वासी के साथ चलता है इस इंतज़ार में कि उसे कब कैसी सहायता की ज़रूरत पड़ती है।

कुछ लोग अपमानित किए जाते हैं क्योंकि वे सहायता की सेवकाई में बुलाए गए हैं। वे कुछ और बनने का प्रयास करते हुए स्वयं से संघर्ष करते हैं। वे यह नहीं समझते कि वे वही सेवकाई कर रहें हैं जो पवित्र आत्मा कर रहा है।

आप जहाँ हैं वहाँ आशीष बनिए

> ...जो दया करे, वह हर्ष से करे।
>
> रोमियों 12:8

कुछ बातें हैं जिन्हें मैं और आप परमेश्वर से प्राप्त हुए हमारे वरदान के परिणामस्वरूप करना पसंद करते हैं। हो सकता है हम नहीं सोचते हों कि वे बातें महत्वपूर्ण हैं–परंतु वे हैं। हम यह तब जानेंगे जब हम उसे करना प्रारंभ करते हैं।

आप लोगों के लिए एक आशीष बन सकते हैं चाहे आपका वरदान कितना भी साधारण क्यों न हो। यदि आप एक अच्छे रसोईया हैं, या बेकिंग करना पसंद करते हैं, अपने वरदानों और योग्यताओं का उपयोग अपने अलावा किसी और को आशीष देने के लिए कीजिए।

एक रात एक मित्र ने मेरे और मेरे पति के लिए एक बर्तन में सूप लाया। यह मेरे जीवन का सबसे स्वादिष्ट सूप था, मैंने उसे बहुत पसंद किया। हमने चार दिनों तक यही बात की कि वह सूप कितना स्वादिष्ट था।

बाद में हमारे मित्र ने हमसे कहा कि जब वह सूप बना रही थी तो यही सोच रही थी, "मुझे जॉयस के लिए इसमे से कुछ ले जाना चाहिए।" परंतु उसने इस ख्याल को मन से निकाल दिया यह सोचकर कि यह मूर्खतापूर्ण होगा। "उन्हें मेरे सूप की ज़रूरत नहीं होगी।"

कितनी बार शैतान हमें आशीष बनने से रोक कर धोखा देता है? क्या आप जानते हैं कि सबसे महान कार्य जो आप कर सकते हैं वह किसी के लिए आशीष बनना है? यह कल्पना करना बंद कीजिए कि आपके वरदान क्या है और कुछ ऐसा करना प्रारंभ कीजिए जो आप पसंद करते हैं–उसमें व्यस्त हो जाइए और उसे कीजिए।

यदि आप लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं, तो उन्हें उत्साहित करना आप अपना कार्य बना लीजिए। यदि आप देना पसंद करते हैं तो कुछ पाइए और उसे दे दीजिए। यदि आप सहायता करना पसंद करते हैं, तो उन सबकी सहायता कीजिए जिनकी आप कर सकते हैं। लोगों को आशीष दीजिए।

हमें हमेशा कुछ बड़ी आत्मिक बातें करने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में कुछ एक बड़ी बातें जो हम नहीं सोचते कि आत्मिक हैं वे

परमेश्वर के लिए अधिक महत्वपूर्ण हैं उन बातों की तुलना में जिनके विषय में हम सोचते हैं कि वे बड़ी हैं।

अपने वरदान को चमकाइए

> इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो तुझे मिला है ...चमका दे।
>
> 2 तिमुथियुस 1:6

बहुत बार हम कुछ महान "आत्मिक" अनुभवों की खोज करते हैं। हम रात्री में बिस्तर पर जाते हैं और शैतान कहता है, "हाँ, आज तुमने कुछ भी अच्छा काम नहीं किया है।" परंतु यदि हमने किसी ओर के जीवन को प्रभावित किया हो, यदि हमने किसी और को प्रसन्न किया है, यदि हमने किसी के चेहरे पर मुस्कुराहट लाई है, तो हम ने कुछ अच्छा किया है। यह योग्यता परमेश्वर की ओर से वरदान है।

महान प्रेरित पौलुस अपने जवान शिष्य तिमुथियुस से अपने वरदानों को पहचानने के लिए कहता है। यह हम सबके लिए एक अच्छी सलाह है। कभी-कभी हम अपने वरदानों के साथ सुस्त हो जाते हैं। हमें लक्ष्यपूर्वक उन वरदानों को चमकाने की ज़रूरत हैं। हमें पुनः"कार्य करने के लिए जुट जाने" की ज़रूरत हैं।

यदि आप बिना मौलिक होने और असुरक्षा के भाव से विजय पाना चाहते हैं तो अपने वरदानों को पहचानिए। परमेश्वर ने जो कुछ आपके भीतर रखा है उसका इस्तेमाल करना प्रारंभ कीजिए। व्यस्त होइए और आपके पास जो कुछ है उससे आप क्या कर सकते हैं।

वह कीजिए जो आप करना पसंद करते हैं, फिर बार-बार कीजिए।

6

भिन्न होने का साहस रखिए

यदि आप असुरक्षा पर विजय पाने और इसी में वह व्यक्ति बनने जा रहें हैं जिसके लिए आपको बुलाया गया है, *तो अवश्य ही आपको भिन्न होने का साहस रखना चाहिए।*

यद्यपि हममें से हर एक भिन्न हैं, फिर भी हम एक दूसरे के समान होने का प्रयास करते हैं। यही अप्रसन्नता का कारण बनता है।

हर किसी के समान मत रहिए

अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूँ या परमेश्वर को?...

गलातियों 1:10

यदि आप पूर्ण रीति से और पूर्ण तरीके से स्वयं में सफल होने जा रहें तो, आप हर किसी के समान न बनने का एक अवसर पाने जा रहें हैं।

क्यों न अपने आप से वह प्रश्न पूछें जो पौलुस ने पूछा था? क्या आप मनुष्यों को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहें हैं या परमेश्वर को?

मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले या परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले?

> मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये सेवा न करो, पर मसीह के दासों के समान मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो।
>
> इफिसियों 6:6

मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले बनना आसान कार्यों में से एक है जो हम कर सकते हैं परंतु ऐसा कार्य है जो अनंतः हमें अप्रसन्न बनाता हैं। जब हम दूसरे लोगों को प्रसन्न करना प्रारंभ करते हैं तो ऐसी टिप्पणियाँ सुनना पसंद करते हैं जो हमें अपने विषय में अच्छा महसूस कराता है। यह तब तक ठीक है जब तक हम उसमें से अपने महत्व को अलग नहीं कर लेते हैं। विश्वासियों के रूप में, अपने मूल्य विचारों पर जड़ पकड़ लेना और स्थिर हो जाना मनुष्यों के विचारों पर आधारित नहीं होना चाहिए परंतु परमेश्वर के प्रेम में आधारित होना चाहिए।

हम इसलिए मूल्यवान हैं क्योंकि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिए मरने भेजा। हम इसलिए मूल्यवान हैं क्योंकि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, इसलिए नहीं कि अन्य हर कोई हमारे विषय में क्या सोचते हैं या क्या कहते हैं।

हम "मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले" बनते हैं जब हम वे बातें नहीं करते हैं जो हम करना चाहते हैं। परंतु वह करते हैं जो हर कोई हमसे करवाना

चाहता है क्योंकि हम सोचते हैं इससे हमें स्वीकार्यता और प्रमाणिकता मिलेगी।

प्रेरित पौलुस का यह स्वभाव नहीं था न ही ऐसी सलाह थी।

दूसरों को आपका शोषण करने न दें

> फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो। परन्तु मेरी दृष्टि में यह बहुत छोटी बात है, कि तुम या मनुष्यों का कोई न्यायी मुझे परखे, वरन् मैं स्वयं अपने आप को नहीं परखता।
>
> 1 कुरिन्थियों 4:2,3

यह एक बहुत ही मुख्य आचरण है–सार्वजनिक विचार या चाहे अपने ही स्वयं के विचार की परवाह नहीं करना।

आप कहाँ तक सोच सकते हैं कि यीशु क्या प्राप्त करता यदि वह सोचता कि लोग क्या सोचेंगे। फिलिप्पियों 2:7 कहता है कि, यीशु ने जानबूझकर "अपने आपको आदर का पात्र नहीं बनाया।" जब मैं इस पद को एक दिन मनन कर रही थी, यीशु ने कहा, "मैंने उसे वही पर छोड़ दिया।" क्रमशः मैंने भी उसे ऐसा किया। अब मैं कभी ऐसा महसूस नहीं करती कि मुझे पीछे मुड़कर हर समय लोगों को प्रसन्न करते रहना है।

मुझे अवश्य ही स्वीकार करना चाहिए कि मैं इसे पसंद नहीं करती जब लोग मुझसे अप्रसन्न होते हैं। मैं इसे बिलकुल भी पसंद नहीं करती यदि मेरी ही कोई संतान मुझसे अप्रसन्न हो। परंतु मैं जानती हूँ कि मैं लोगों को उनके माँगों के द्वारा मेरा शोषण करने नहीं दे सकती हूँ।

मसीह के अनुयायियों के रूप में, हमें आत्मा के द्वारा चलना है, न कि मनुष्यों के द्वारा नियंत्रित। इसी प्रकार हमें दूसरों को नियंत्रित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए परंतु उन्हें अनुमति देना चाहिए कि वे भी पवित्र आत्मा द्वारा चलें।

प्रेम में चलें

> और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया, और हमारे लिये अपने आप को... बलिदान कर दिया।
>
> इफिसियों 5:2

बात यह है कि, यदि हम वह कार्य श्रेष्ठता से करते हैं जिसे हम जानते हैं कि कैसे करना है तो हमें दूसरों के विचारों की चिंता में खुद को नहीं डालना चाहिए।

हमें अब भी प्रेम में चलना चाहिए। हम वह सब नहीं कर सकते जो हम करना चाहते हैं, और किसी भी समय जब हम चाहते हैं। हम नहीं कह सकते, "अगर किसी को पसंद नहीं है तो वह कठिन है, यह उनकी समस्या है।" प्रेम इस प्रकार से व्यवहार नहीं करता।

फिर भी हमें लोगों को हमारा शोषण और हमें नियंत्रित उस विषय तक नहीं करने देना चाहिए कि हम कभी वह होने में स्वतंत्रता महसूस न करें जो हम हैं। यदि हम करते हैं, तो हम हमेशा वह बनने का प्रयास करते रहेंगे जो हमारे विषय में अपेक्षा करते हैं कि हम हों।

रूपांतरित रहिए, अनुरूप नहीं

> इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से

तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।
रोमियों 12:2

संसार लगातार हमें अपने स्वरूप में बनाने का प्रयास कर रहा है। जब मैं "संसार" कहती हूँ, तो मेरा तात्पर्य उन लोगों से है जिन्हें हम प्रतिदिन के आधार पर जानते और व्यवहार करते है। यह परिवार, मित्र पड़ोस के लोग या कलीसिया भी हो सकती है।

सादृश्य बनने का तात्पर्य हैः "1. रूप या चरित्र में समान होना। 2. समान होना, 3. प्रभावी या प्रबल परम्पराओं या तरीकों के अनुसार व्यवहार करना।"

लोग हमेशा प्रयास करेंगे कि हम उनके ढ़ाँचे में फिट हो जाएँ आंशिक रूप से उनकी अपनी असुरक्षा के कारण। या उन्हें इस बात के प्रति अच्छा महसूस कराए जो वे कर रहे हैं यदि वे किसी और को भी ऐसा करते हुए देख सकते हैं।

बहुत कम ही वह बनने की योग्यता रखते हैं जो वे हैं और अन्य हर किसी को वही बने रहने देते हैं जो वे हैं। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि संसार कितना सुंदर होता यदि हम सब यह करते? हर व्यक्ति जो हैं वह उसमें अपने आपको सुरक्षित पाता और अन्य लोगों को भी वही बने रहने देते जो वे हैं। हम एक दूसरें के नकल बनने का प्रयास नहीं करते हैं।

भिन्न रहे – एक प्रवर्तक बनिए

देखों, मैं एक नई बात करता हूँ; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उससे अनजान रहोगे?...
यशायाह 43:19

कलीसिया के सभी महान सुधारक जैसे मार्टिन लूथर और कलीसिया और संसार में सभी महान समाज सुधारक ऐसे लोग थे जो बाहर निकले और स्थापित परंपराओं से भिन्न कार्य किए। बाइबल के महान स्त्रियों और पुरुषों के विषय में यही सच हैं।

परमेश्वर का भविष्यवक्ता कहलाने के लिए यिर्मयाह बहुत छोटा था। परमेश्वर को उसने जो बहाना दिया वह यह था, "मैं बहुत छोटा हूँ।"

तिमुथियुस ने भी कहा "मैं बहुत छोटा हूँ।" पौलुस को तिमुथियुस को बार-बार प्रोत्साहित करना पड़ा। "अपनी जवानी के विषय में चिंता मत करो तिमुथियुस, परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया और अभिषेक किया है। अपनी आँखों को उस बुलाहट पर बनाए रखो।"

क्या होता यदि यूहन्ना बप्तिस्मा दाता या प्रेरित पौलुस या यीशु भी भिन्न होने का साहस नहीं रखते? हम बाइबल के उन महान स्त्रियों और पुरुषों को देखते हैं और सोचते हैं कि वे कितने अद्‌भुत थे। परंतु उन्होंने एक कीमत चुकाई। उन्हें बाहर निकलना और प्रवर्तक बनना था। उन्हें भिन्न होना था। उन्हें दूसरें उनके विषय में हर कोई क्या सोचते उससे शासित होने और नियंत्रित होने से बचना था।

आत्मा के फल में व्यवहार कीजिए

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

गलातियों 5:22,23

चाहे हम यह निर्णय भी कर लें कि हम प्रवर्तक और भिन्न होने जा रहें हैं, फिर भी हमें आत्मा के फल के अनुसार व्यवहार करने की ज़रूरत हैं। हमें आस पास एक भिन्न विद्रोही व्यवहार के साथ नहीं जाना है। उसी समय हम संसार के सदृश्य जीवन भी व्यतीत नहीं कर सकते क्योंकि परमेश्वर हमें उपयोग करना चाहता है। उसके पास कुछ कार्य हैं जो वह हमारे द्वारा करना चाहता है।

परमेश्वर हमारा उपयोग करना चाहता है

> जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैं ने उन्हें बुलाया हैं।"
>
> प्रेरितों के काम 13:2

परमेश्वर हमें हमारी सारी कमज़ोरियों और अयोग्यताओं के साथ लेना और हमें रूपांतरित करना चाहता है। भीतर से कार्य करने के द्वारा कि इस पृथ्वी पर कुछ सामर्थी कार्य किए जाएँ।

शैतान संसार और संसार की व्यवस्था को हमें परमेश्वर की इच्छा से और हमारे लिए परमेश्वर की ओर से ठहराए गए श्रेष्ठत्तम से दूर रखने का प्रयास करने के लिए इस्तेमाल करेगा। शैतान हमसे यह कहने के द्वारा हमें संसार के सदृश्य बनाने का प्रयास करेगा कि यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हम अस्वीकार किए जाएँगे।

यदि हम खड़े होने और असुरक्षा पर विजय पाने जा रहें हैं, यदि हम अपने आप में सफल होने जा रहें हैं, तो हम लगातार इस भय में नहीं रह सकते कि हर कोई क्या सोचेगा।

यदि हम प्रसिद्ध होना चाहते हैं, तो एक बहुत बड़ी संभावना है कि हम अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा से चूक जाएँ।

परमेश्वर की बुलाहट के प्रति हाँ कहिए

तब मैंने प्रभु का यह वचन सुना, "मैं किसको भेजूँ, और हमारी ओर से कौन जाएगा? तब मैं ने कहा, मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज।"

यशायाह 6:8

इस समय मैं बहुत अधिक कष्ट में होती यदि मैंने अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट को न कर दिया होता। मैं अपने घर में ही रही होती, और टमाटर उगा रही होती और अपने पति के कपडों को सिल रही होती क्योंकि मैं यही सोचती रहती थी कि ऐसा करने से ही मैं अपने पड़ोस में समान्जस्य बिठा सकती हूँ, परंतु मैं अपने जीवन भर कष्टप्रद रहती। इस सच्चाई को आज आप अपने जीवन के लिए ले लें।

जब परमेश्वर ने मुझे और डेव को चंगाई और आत्मा के बपतिस्मा और आत्मा के वरदानों के विषय में शिक्षाओं को दिखाना प्रारंभ किया, तब हम एक ऐसी कलीसिया में जा रहें थे जहाँ पर ऐसे विचार, व्यवहार चलन में नहीं थे या स्वीकारयोग्य भी नहीं थे। अंततः हमें उस कलीसिया को और अपने सभी मित्रों को छोड़ देना पड़ा।

हम उस कलीसिया में हर बात में सहभागी होते थे। हमारा सारा जीवन उसके चारों ओर घूमता था। परंतु हमसे कहा गया, "यदि आप उन बातों पर विश्वास करने जा रहे हैं जिनके विषय में आप कहते हैं कि आप विश्वास करते हैं, तो आगे हम आपके साथ कोई संगति नहीं रख सकते हैं।" वे लोग वास्तव में यह कह रहे थे, "जॉयस, देखो यहाँ पर हमारी एक

व्यवस्था है और जो तुम और डेव कर रहे हो इसमें उपयुक्त नहीं बैठता है। यदि आप यहाँ पर रहना चाहते हैं, तो आपको उन बातों को भूल जाना होगा और हमारे व्यवस्था में सामन्जस्य बिठाना होगा।"

उस कलीसिया को छोड़ने का निर्णय बहुत कठिन था। परंतु यदि मैंने उसकी माँगो को मान लिया होता, तब मैं अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा से चूक गई होती।

आप विजयी होकर बाहर निकलेंगे

> यीशु ने कहा, "मैं तुम से कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और बाल-बच्चों और खेतों को, पर सताव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन।"
>
> मरकुस 10:29-30

उस कलीसिया को छोड़ने के पश्चात, में बहुत अकेलेपन के समय के दौर से गुज़री, परंतु अब मेरे पास उस समय से बहुत अधिक मित्र हैं।

यहि परमेश्वर आपको बाहर निकलने के लिए बुलाता है, संसार आपसे सामन्जस्य बिठाने की माँग करेगा। परमेश्वर के लिए निर्णय कीजिए। आप ऐसे परीक्षाओं से गुज़रेंगे–जो चुनौती का भाग है। आप एक अकेलेपन के दौर से गुज़रेंगे। अन्य दूसरी समस्याएँ भी होंगी, परंतु दूसरे पहलु में आप विजयी होकर बाहर निकलेंगे। आप रात्री में विश्राम के समय भीतर चैन प्राप्त करेंगे यह जानकर, कि चाहे आप अन्य लोगों के समान प्रसिद्ध भी न हो, आप परमेश्वर को प्रसन्न कर रहें हैं।

मनुष्यों को नहीं, परमेश्वर को प्रसन्न करो

...तू मेरा प्रिय पुत्र, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ!

लूका 3:22

यीशु बहुत ही प्रसन्न हुआ होगा जब उसके बपतिस्मा के समय स्वर्ग से यह कहते हुए एक आवाज़ आई, "कि यह मेरा प्रिय पुत्र हैं, जिससे मैं प्रसन्न हूँ..." (मत्ती 17:5)। परंतु उसके जीवन में उस समय तक, बहुत कम लोग थे जो उसे समझते थे या जो कार्य वह करता था उसे पसंद करते थे।

जैसा कि हमने देखा, पौलुस ने अन्य लोगों के द्वारा या स्वयं के द्वारा जाँचे जाने का इंकार किया। यदि वह न्याय के वशीभूत होता, तो शैतान उसे पराजित कर देता।

जिन लोगों ने सेवकाई के लिए पौलुस की योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाया उनसे पौलुस का संदेश यह थाः "आगे को कोई मुझे दुःख न दे, (मेरे लिये अपनी प्रेरितीय अधिकार और मेरे सुसमाचार के ईश्वरीय सत्य की रक्षा करना अनिवार्य करने के द्वारा)। क्योंकि मैं यीशु के दागों (छाप) को अपनी देह में लिए फिरता हूँ" (घाव दाग, और सताव के अन्य बाहरी प्रमाण–ये मुझ पर उसके स्वमित्व की गवाही देते हैं)। (गलातियों 6:17)।

अपनी बात पर स्थिर रहिए

राजा ने आज्ञा दी कि उसके भोजन और पीने के दाखमधु में से उन्हें प्रतिदिन खाने-पीने को दिया जाए। इस प्रकार तीन वर्ष तक उनका पालन पोषण होता रहे; तब उसके बाद वे राजा के सामने हाज़िर किए जाएँ।

दानिय्येल 1:5

बेबीलोन के हाथों यहूदिया के पतन के पश्चात तत्कालीन बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर से निर्णय लिया कि कुछ इब्री पुरुषों को लाकर उसके सहायकों के रूप में प्रशिक्षित किया जाए। उसका उद्देश्य था कि उसके दरबार के आचरण या जीवनचर्या में सिखाया जाएँ।

परंतु दानिय्येल जो यहूदिया का एक भक्त व्यक्ति था जो प्रभु से प्रेम करता था, "...अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपवित्र न होए; इसलिए उस ने खोजों के प्रधान से विनती की कि उसे अपवित्र न होना पड़े" (दानिय्येल 1:8)।

दानिय्येल इस बात के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञित था कि वह मनुष्यों को प्रसन्न करनेवाला नहीं परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाला होगा। उसने राजा के बताए स्वरूप में होने से इंकार किया।

दानिय्येल अपनी बात पर स्थिर रहा और राजा और उसके दरबार की प्रीति बटोरी। उसकी निडर स्थिरता के परिणामस्वरूप अंततः परमेश्वर ने उसे एक सामर्थी रीति से उपयोग में लाया।

राज्य में महिमा प्राप्त

> तब राजा ने दानिय्येल का पद बड़ा किया, और उसको बहुत से बड़े बड़े दान दिए; और यह आज्ञा दी कि वह बेबीलोन के सारे प्रान्त पर हाकिम और बेबीलोन के सब पण्डितों पर मुख्य प्रधान बने।
>
> दानिय्येल 2:48

दानिय्येल एक परीक्षा और परख के दौर से होकर गुज़रा, परंतु अंत में वही राजा जिसने उसे अपने समान बनाना चाहा था उसके लिए उसके

मन में ऐसा आदरभाव जागा कि उसने उसे अपने राज्य में एक उच्च पद दिया।

ठीक यही बात कार्य क्षेत्र में वर्षो पूर्व मेरे साथ भी हुई थी। मेरे अधिकारी मुझे चाहते थे कि मैं उसकी सहायता करने के लिए कुछ धन चुराऊँ। मैं एक पुस्तकालय में काम करती थी, या पुस्तकालय में रख-रखाव करती थी और वह चाहते थे कि मैं किसी ग्राहक के श्रण को या कर्ज़ को मिटा दूँ। ग्राहक ने बिल का दो बार भुगतान किया था और मेरे नियोक्ता नहीं चाहते थे कि ग्राहक के भुगतान विवरण में यह बात दिखाई दे।

मैंने ऐसा करने से मना कर दिया।

कुछ वर्ष पश्चात मैंने उस कंपनी में बहुत कृपा प्राप्त की। मैं दफ़्तर में दूसरे नंबर की अफसर बना दी गई और सबसे ऊपर हुकुम चलाने में मैं दूसरे स्थान पर थी। मुझे ऐसी समस्याओं को भी सुलझाने दिया जाता था जिन्हें मैं समझती भी नहीं थी।

एक जवान महिला के रूप में उस कंपनी में नेतृत्व की एक उच्च भूमिका थी। वास्तव में मैं उस पद के लिए कोई प्रशिक्षण या शैक्षिक योग्यता नहीं रखती थी।

यह कैसे हुआ? यह इसलिए हुआ क्योंकि दानिय्येल के समान मैंने एक निम्न स्तर पर जाने से इंकार कर दिया। कंपनी में मेरा आदर किया गया और आदर के एक उच्च पद पर मुझे पदोन्नति दी गई।

वे जो आपके सामने समझौतावादी रास्ता रखने का प्रयास करते हैं वे आपका आदर नहीं करेंगे यदि आप समझौता कर लेते हैं। यथार्थ में आपकी कमज़ोरी के कारण वे आपको तुच्छ जानेंगे। वे जानेंगे कि वे आपको नियंत्रित कर रहें हैं और वे जो कर रहें हैं वह गलत हैं। परंतु यदि

आप अपनी स्थिति पर जमें रहेंगे तो आप वो व्यक्ति होंगे जो अंततः आदर प्राप्त करेंगे। क्षणभर के लिए हो सकता है वे आपको पृथ्वी भर के सबसे निम्न प्राणी के रूप में देखेंगे। परंतु जब सब कुछ कह और कर चुके होंगे, आप आदर प्राप्त करेंगे।

परमेश्वर की आज्ञा का पालन कीजिए

> नबूकदनेस्सर ने उन से पूछा, "हे शद्रक, मेशक और अबेदनगो, तुम लोग जो मेरे देवता की उपासना नहीं करते, और मेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् नहीं करते, तो क्या तुम जान बूझकर ऐसा करते हो?"
>
> दानिय्येल 3:14

उसी राजा ने एक नया नियम बनाया और एक नया आदेश निकाला। उसने शहर के मध्य में एक सुनहरी मूर्ति लगाई और हर एक से कहा गया वे उसके सामने दण्डवत करें और उसकी आराधना करें। कोई भी जो ऐसा करने से इंकार करते थे वे आग में डाल दिए जाते थे।

शद्रक, मेशक, और अबेदनगो यह तीनों दानिय्येल के निकट मित्रों ने दण्डवत करने से इंकार किया। उनके ऊपर वही आत्मा थी जो दानिय्येल के ऊपर थी। राजा ने उनसे कहा, "यदि तुम वैसा नहीं करते हो जैसा मैं कहता हूँ, तो मैं तुम्हें जिंदा जलाने जा रहा हूँ।"

क्या यही मूल बात नहीं है जो संसार मुझे से आपसे कहता है? यदि हम उसके स्तर के साथ सामन्जस्य रखने से इंकार करते हैं तो संसार यह कहते हुए हमें धमकी देता है, "यदि तुम दण्डवत नहीं करते हो और जो हम करने के लिए कहते हैं नहीं करते हो, यदि तुम हमारे साँचे में नहीं ढ़लते हो तो हम तुम्हें जिंदा जलाने जा रहें हैं।"

यही हैं जो हमें इब्री संतान के रूप में करने और प्रभु पर भरोसा रखने की ज़रूरत हैं।

परमेश्वर पर भरोसा रखिए

> शद्रक, मेशक, और अबेदनगो ने राजा से कहा, "हे नबूकदनेस्सर, इस विषय में तुझे उत्तर देने का हमें कुछ प्रयोजन नहीं जान पड़ता।"
>
> हमारा परमेश्वर, जिसकी हम उपासना करते हैं वह हम को उस धधकते हुए भट्ठे की आग से बचाने की शक्ति रखता है; वरन हे राजा, वह हमें तेरे हाथ से भी छुड़ा सकता है।
>
> परन्तु यदि नहीं, तो हे राजा, तुझे मालूम हो, कि हम लोग तेरे देवता की उपासना नहीं करेंगे, और न तेरी खड़ी कराई हुई सोने की मूरत को दण्डवत् करेंगे।
>
> दानिय्येल 3:16-18

क्या आप जानते हैं कि शद्रक, मेशक और अबेदनगो के विषय में मैं क्या बात पसंद करती हूँ? भय खाने या समझौता करने से उनका पूरी तरीके से इंकार करना। उन्होंने राजा से कहा, "हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हमें छुड़ाने जा रहा है। परंतु यदि वह *नहीं भी* छुड़ाता है, तब भी हम मूर्ति के सामने दण्डवत नहीं करने जा रहे हैं, हम वो करने जा रहें है जो परमेश्वर हमें करने के लिए कहता है। तुम अपने आग के भट्ठे के साथ जो करना चाहते हो कर सकते हो। परंतु हमारे साथ जो कुछ भी होगा उसमें हम शांति प्राप्त करेंगे।"

यही व्यवहार उन लोगों के प्रति हमारा होना चाहिए जो हम पर दबाव डालने की कोशिश करते हैं कि हम उस बात को नहीं माने जिसके विषय में हम जानते हैं कि हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा है।

परमेश्वर ने जो आज्ञा दी है उसे साहसपूर्वक कीजिए

> जब दानिय्येल को मालूम हुआ कि उस पत्र पर हस्ताक्षर किया गया है, तब वह अपने घर में गया जिसकी उपरौठी कोठरी की खिड़कियाँ यरूशलेम के ओर खुली रहती थी, और अपनी रीति के अनुसार जैसा वह दिन में तीन बार अपने परमेश्वर के सामने घुटने टेककर प्रार्थना और धन्यवाद करता था, वैसा ही तब भी करता रहा!
>
> दानिय्येल 6:10

यहाँ पर दानिय्येल की किताब से एक अंतिम उदाहरण है।

बाद में एक दूसरी आज्ञा निकाली गई कि कोई भी राजा के अलावा किसी दूसरे को प्रार्थना न करे। यह नियम एक चाल थी जो दानिय्येल के शत्रुओं के द्वारा उसका नाश करने का प्रयास करने के लिए निकाली गई थी। परंतु दानिय्येल साहसपूर्वक अपने कक्ष में गया और प्रभु से अपनी खिडक़ी को यरूशलेम की तरफ खोलकर प्रार्थना किया जैसे वह प्रतिदिन करता था।

यदि यह हमारे साथ हुआ होता तो क्या हम अपनी खिड़कियों को बंद नहीं करते इस उम्मीद के साथ कि हम पकड़े न जाएँ क्या हम बंद खिड़कियों में एक ही बार प्रार्थना नहीं करते? क्या हम यह नहीं सोचते कि

ऐसा करने से परमेश्वर हमसे क्रोधित नहीं होगा? क्या हम राजा और परमेश्वर दोनों को प्रसन्न करना चाहते हैं?

यदि हम विश्वास करते हैं कि हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर रहें हैं और हम विरोध की तरफ़ भागते हैं तो हमें लगातार वह करने की ज़रूरत हैं जिसके विषय में हम जानते हैं कि परमेश्वर ने हमसे करने के लिए कहा है।

भिन्न होने का साहस रखिए

...दानिय्येल, दारा और कुस्रू फारसी, दोनों के राज्य के दिनों में सुख-चैन से रहा।

दानिय्येल 6:28

दानिय्येल के प्रत्येक वर्णन में हम पाते हैं कि दानिय्येल पर हमेशा दबाव डाला गया कि वह वो कार्य करे जो अन्य लोग चाहते हैं और वैसा बनें। उसने दबाव के अधीन होने से इंकार किया। परख और परीक्षा से कष्ट के समय के पश्चात, परमेश्वर ने उसे ऊँचा उठाया और वह पूरे राज्य का अधिकारी ठहराया गया।

भिन्न होने का साहस रखिए। यह आपके जीवन को बदल देगा, और परमेश्वर आपको इस प्रक्रिया में ऊँचा उठाएगा।

7

आलोचना से निपटने के लिए सीखना

यदि आप असुरक्षा पर विजय पाने जा रहे हैं, तो आप आलोचना के साथ निपटना सीखने जा रहें हैं।

पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलिए

> तुम्हारा वह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है...
>
> 1 यूहन्ना 2:27

क्या आप एक स्वयं का मूल्य लगानेवाले व्यक्ति हैं या क्या आप दूसरों से अपना मूल्य निर्धारण चाहते हैं? दूसरों या बाहरी निर्धारण से मेरा तात्पर्य

है, कि कोई और आपको बताए कि आप ठीक ठाक हैं कि जो आप कर रहें हैं वह ठीक है। स्व-मूल्य निर्धारण या आंतरिक मूल्य निर्धारण से मेरा तात्पर्य है, वह कार्य करना जैसे आप पवित्र आत्मा के द्वारा चलते हैं, जो आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपसे करने के लिए कह रहा है।

एक दिन मैंने अपने घर को पुनः सुसज्जित करने का निर्णय लिया। मैंने वॉल-पेपर के नमूनों की किताब ली और वे वॉल पेपर निकाले और जिनके विषय में मैं सोचती थी कि वे अच्छे दिखेंगे। तब उन्हें दूसरे लोगों को दिखाया और कहा, "मैं इसे यहाँ पर लगाने जा रही हूँ, आप क्या सोचते हैं?"

क्योंकि इस क्षेत्र में मैं असुरक्षित थी मैं बाहरी मूल्य निर्धारण चाह रही थी। मुझे वह सुनने की ज़रूरत थी जो मेरे कार्य के विषय में अन्य लोग क्या कह रहे थे।

मैंने एक भी ऐसे व्यक्ति को नहीं पाया जिसके विचार मेरे विचार से मिलते थे। हर व्यक्ति का एक भिन्न विचार था। मैं भ्रम में पड़ गई और मुझे मुश्किल से समझ में आया कि क्या करना हैं।

हम सब भिन्न है। हम सब अलग-अलग व्यक्ति हैं। मुझे यह उम्मीद नहीं रखना चाहिए था कि जो मैंने पसंद किया उसे हर कोई पसंद करेगा। वास्तविक मुद्दा यह था कि क्या मैं परिणाम के साथ संतुष्ट थी या नहीं। क्योंकि मुझे ही इसके साथ जीना था।

दूसरे लोगों से यह पूछते हुए समय बर्बाद मत कीजिए कि आपके कपड़े ठीक हैं कि नहीं या आपके बाल ठीक हैं कि नहीं या वे आपकी कार पसंद करते हैं कि नहीं। स्व-मूल्य निर्धारण करने वाले बनिए।

अपने स्वयं का निर्णय लीजिए

परन्तु परमेश्वर की, जिसने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया,

जब इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊँ; तो न मैं ने मांस और लहू से सलाह ली।

गलातियों 1:15-16

पौलुस ने कहा कि जब वह अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाने के लिए परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया, तो उसने किसी और से इस विषय के लिए सलाह नहीं ली।

बहुत बार जब हम परमेश्वर से संदेश प्राप्त करते हैं, तो हम बहुत अधिक मांस और लहू से सलाह लेते हैं। हम चारों तरफ़ देखते हैं कि कोई न कोई हमें निश्चय दिलाए कि जो हम कह रहे हैं वह सही है। यूहन्ना हमसे कहता है कि चूँकि हममें पवित्र आत्मा है, सत्य की आत्मा हममें है, तो हमें किसी मनुष्य से सलाह लेने की आवश्यकता नहीं है।

निश्चय ही, इस प्रश्न का एक दूसरा पहलु भी है। नीतिवचन का लेखक कहता है कि "...सलाहकारों के मध्य में सुरक्षा है।" (नीतिवचन 11:14)।

उत्तर यह है कि दूसरों के सलाह से इंकार किए बिना आज्ञाकारी रहना जो हमसे अधिक बुद्धिमान या उस विषय में अधिक ज्ञानी हैं।

सजाने के विषय में लोगों ने मुझ से क्या कहा इसे सुनने के द्वारा मैंने कुछ मूल्यवान सिद्धांत सीखे। ऐसी बातें जिन्हें मैं पहले जानती भी नहीं थी। परंतु मैंने उनके विचारों को अपने अंतिम निर्णय को प्रभावित करने नहीं दिया।

हमें अवश्य ही दूसरों के द्वारा अनावश्यक रूप से केवल इसलिए प्रभावित होने नहीं देना चाहिए कि हम अपना निर्णय लेने में डरते हैं। यदि हम स्वयं मूल्य निर्धारण करने वाले लोग बनने जा रहें हैं, तो हमें आलोचना के साथ समान्जस्य बिठाना सीखना चाहिए।

दूसरों के विचारों के अनुसार यदि मैंने अपने घर को सजाया होता तो क्या होता? और तब कोई और आता और कहता, "ओह, मैं नहीं सोचती कि मैं इसे इस प्रकार से करती?" मैं भ्रम में पड़ जाती।

ऐसा लगता है कि कुछ लोग सोचते हैं कि दूसरों को हर बात में हर किसी को अपने व्यक्तिगत विचार देना उनके जीवन का कर्तव्य है। एक महान शिक्षा में से एक जो हम सीख सकते हैं वह हैं–अवांक्षित सलाहों और विचारों को न तो दें–न प्राप्त करें।

गुलामी के अधीन मत आइए

> मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; अतः इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो।
>
> गलातियों 5:1

यह जानने के लिए सुरक्षित हो जाइए कि बिना यह महसूस किए कि आपके साथ कुछ गलत है आलोचना के साथ किस प्रकार सामन्जस्य बिठाना है। यह सोचते हुए भ्रमित मत होइए कि आपको दूसरों के विचारों को जानना है।

मान लीजिए कि कोई मेरे पुनः सुसज्जित घर में आए और मुझ से कहे, "क्या तुम जानती हो, मालूम नहीं तुम इससे जानकर हो या नहीं,

जॉयस, यदि तुम उन फूलों की सज्जा एक ऊँचे मेज़ पर करती तो यह उस छोटे मेज़ की सज्जा से अच्छे दिखते।"

यदि मैं अपने जीवन में और अपने दृष्टिकोण में सुरक्षित होती तो मैं बिना किसी भेद भाव के उस व्यक्ति के विचारों को ध्यान दे सकती थी। जो उसने सलाह दिया ऐसा मुझे करना था। यदि मैं अपने विषय में कुछ निम्न भावना रखती तो कम से कम उस पर विचार कर सकती जो उसने कहा।

"मैं सोचती हूँ, कि आप सही है।"

कभी कभी मैं जानती हूँ कि कुछ बातें सही नहीं होती, परंतु मुझे नहीं पता होता कि उन्हें कैसे उपयुक्त किया जाए। यदि कोई और व्यक्ति जो उसके विषय में और अच्छी रीति से जानता है जिनके पास कोई सलाह है, तो मैं कह सकती हूँ, "हाँ, मैं सोचती हूँ कि आप सही होंगे। मैं इसे कोशिश करूँगी।"

मसीह में आप जो हैं इस बात में आप पर्याप्त भरोसा रखिए कि आप दूसरों की सुन सकें और बिना किसी भेद-भाव के आप बदलने के लिए स्वतंत्र हों। और उनके दृष्टिकोण के साथ सहमति रख सकें या उनकी प्रमाणिकता या उनकी सहमति को प्राप्त करें यदि आप महसूस नहीं करते कि उनकी सलाह आपके लिए सही है।

आलोचना को निपटना सीखिए।

8

अपने मूल्य का निर्धारण कीजिए

अपने मूल्य का निर्धारण कीजिए–आपके लिए दूसरों को यह कार्य करने न दें।

प्रशंसा की आवश्यकता

..."तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।"

मरकुस 1:11

एक बच्चे को अपने माता-पिता से प्रशंसा की ज़रूरत होती है। अपने बच्चों को यह सिखाना माता-पिता का कार्य है कि उनकी कमज़ोरियों और घटियों के बावजूद उनसे प्रेम किया जाता है।

यदि बच्चे छोटी उमर से ही इस ज्ञान में आगे बढ़ते हैं, तो वे अपने व्यक्तित्व में दृढ़ता के साथ बढ़ेंगे। वे हमेशा अपने "कार्य में" सिद्धता लाने का प्रयास नहीं करेंगे यह सोंचकर कि केवल उनके अच्छे कार्यों के द्वारा ही स्वीकार किए जाएँगे।

बहुत बार माता-पिता नहीं जानते हैं कि कैसे प्रशंसा करें। अक्सर उनके पास समस्याएँ होती हैं क्योंकि वे अपने माता-पिता से प्रशंसा पाए हुए नहीं होते हैं।

मैंने एक ऐसे मनुष्य के विषय में कहानी पढ़ी जो कभी भी अपने पिता से प्रशंसा नहीं पा सका। पिता ने कभी नहीं कहा, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ और तुमसे प्रसन्न हूँ।"

यह मनुष्य सफल था, फिर भी बहुत ही अप्रसन्न था और बिना किसी प्रगट कारण के अपने आपको रोता सिसकता पाता था। इसलिए उसने इलाज़ कराना प्रारंभ किया जहाँ उसे अपनी समस्या के मूल कारण का पता चला। उसने सीखा कि वह लगातार अपने कामों के द्वारा अपने पिता के सामने अपने आपको साबित करने का प्रयास करता रहा, जिसने उसे परेशान और व्यथित करके छोड़ा।

बहुत बार इस परामर्श के सत्रों के दौरान यह मनुष्य देश के दूसरी तरफ़ स्थित अपने पिता के घर कई बार गया और प्रयास करता रहा कि अपने पिता से प्रशंसा प्राप्त करें। उसने अपने पिता से यह कहते हुए सुनने की अभिलाषा की, "पुत्र, मैं तुझे प्यार करता हूँ और सोचता हूँ कि तुम महान हो। तुमने जीवन में जो कुछ प्राप्त किया है उस पर मुझे गर्व हैं।"

कई बार हम चाहते हैं कि कोई हमसे कहे, "मुझे आप पर गर्व है। मैं आपसे प्रसन्न हूँ।" परंतु कभी-कभी हमें यह समझना चाहिए कि कुछ लोगों से हम वह प्रशंसा प्राप्त नहीं करते।

एक दिन उस व्यक्ति ने अपने आप से यह कहते हुए अपने पिता के घर को छोड़ दिया, "मेरा पिता मुझे कभी भी वह दे नहीं सकते जो मैं उनसे प्राप्त करना चाह रहा हूँ–वह नहीं जानते कि किस प्रकार देना है।"

जब उसने ऐसा कहा, तो यह मानो ऐसा था जैसे उसके भीतर कुछ टूट गया हो। उस क्षण से उसने एक ऐसी आत्मिक स्वतंत्रता का अनुभव किया जैसा पहले कभी नहीं किया था।

प्रेम में स्वीकृत

> और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हो, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत–मेंत दिया।
>
> इफिसियों 1:5,6

हमारे संघर्ष के भाग के रूप में किसी से केवल यह प्रशंसा पाने का प्रयास करना जो कभी वह हमें नहीं देगा, क्योंकि वह साधारण रूप से नहीं जानता कि कैसे प्रशंसा करनी है।

बाइबल हमें सिखाता हैं कि हम उसके प्रिय पुत्र में (उसके पुत्र यीशु मसीह में) परमेश्वर के लिए स्वीकारयोग्य बनाए गए हैं और हर कोई जो यीशु के द्वारा पिता के पास आते वह उन्हें कभी भी नहीं निकालेगा। (इफिसियों 1:6; यूहन्ना 6:37)।

हमें अपने प्रियों से कुछ बातों की ज़रूरत होती है, परंतु यदि वे नहीं जानते हैं कि हमें वह कैसे देना है, परमेश्वर देता है। वह हमारी माता, हमारा पिता, हमारा पति या पत्नी बनेगा जो कुछ हम चाहते हैं कि वह हो।

परमेश्वर हमें वह देगा और हम में उन चीज़ों को बनाएगा जो अन्य लोग हमें नहीं दे सकते हैं।

अपने कामों की ज़िम्मेदारी लीजिए

सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।
रोमियों 14:12

मेरे विवाह के प्रारंभिक वर्षों में मेरे जीवन में और मेरे व्यक्तित्व में बहुत सी समस्याएँ थी। विवाह के बहुत वर्षों के पश्चात, डेव ने मुझ से कहा, "क्या तुम जानती हो? जिस प्रकार से तुम मेरे साथ व्यवहार करती हो यदि उस प्रकार से मैंने अपना मूल्य और अपना पुरुषत्व को आंका होता, तो मुझे निश्चय है कि मैं अपने विषय में अच्छा विचार नहीं रखता।"

क्या आपके जीवन में कोई ऐसा है जिसके साथ आप सही व्यवहार नहीं कर रहे हैं? क्या आप उस व्यक्ति पर अपनी गलतियों के लिए आरोप लगाने का प्रयास करते हैं? क्या कोई है जो आपको दुःख में डाल रहा है उसकी पराजयों और अप्रसन्नता के कारण?

चिकागो में एक महिला ने मुझ से सार्वजनिक असभ्यता के कारण अपने पति की गिरफ़्तारी का कारण बताया।

"मैं उन्हें इस बात के लिए क्षमा कर सकती हूँ," उसने कहा। "यह अशलीलता में पकड़ा गया और मैं जानती हूँ कि यह किस प्रकार का फंदा है। परंतु एक कठिन बात जिसमें से मैं गुज़र रही हूँ वह यह है, वो इसके लिए मुझ पर दोष लगा रहें हैं। वे कहते हैं कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैंने उनकी आवश्यकताएँ पूरी नहीं की।"

मैंने उनसे कहा, "यद्यपि आप उसकी 'आवश्यकताएँ' पूरा नहीं भी कर रहे थे परंतु उसके पाप के लिए यह बहाना नहीं है। आप किसी और को अपनी समस्याएँ आप पर डालने नहीं दे सकते हैं।"

अक्सर लोग जिनकी समस्याएँ होती हैं वे अपनी समस्याओं का उत्तरदायत्व लेना नहीं चाहते हैं। वे एक बलि के बकरे को ढूँढ़ते हैं, वे दोष लगाने के लिए किसी को ढूँढ़ते हैं।

मैं अपने परिवार में यह किया करती थी। हर गलत बात जो मैं करती थी वह किसी और की गलती होती थीः यदि डेव एक विशेष बात नहीं करते, तो मैं विशेष रीति से व्यवहार नहीं करती। यदि मेरे बच्चों ने घर में मेरी अधिक सहायता की होती, तो मैं हर समय शिकायत नहीं करती। यदि डेव लगातार फुटबॉल मैच नहीं देखते तब भी मैं उनके साथ नहीं होती। मैं हमेशा अपने नकारात्मक स्वभाव और व्यवहार के लिए किसी और पर दोष लगाती।

मैं बहुत अधिक प्रसन्न थी कि मेरे पति इस बात में बहुत निश्चित थे कि वह मसीह में कौन हैं। मैं बहुत प्रसन्न थी कि उनकी एक दृढ़ आत्मिक नीव थी और उस समय के दौरान भी मुझ से प्रेम करने के योग्य थे। मै बहुत खुश थी कि उन्होने मुझे उन्हे दोषी या अप्रसन्न महसूस करने नही दिया।

हमारा मूल्य लहू पर आधारित है

...वह हम से प्रेम रखता है, और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है।

प्रकाशितवाक्य 1:5

हमें ऐसे स्थान पर आने की ज़रूरत है जहाँ हम इस बात में पर्याप्त रूप से सुरक्षित हो कि मसीह में हम कौन हैं कि हम अपने मूल्य के भाव को दूसरों के विचारों या कार्यों पर आधारित न होने दें।

अपना मूल्य इस बात में ढूँढ़ने का प्रयास न करें कि आप कैसे दिखते हैं। अपने मूल्य को इस बात में ढूँढ़ने का प्रयास न करें कि आप क्या करते हैं। अपने मूल्य को इस बात में ढूँढ़ने का प्रयास न करें कि दूसरे आप से कैसा व्यवहार करते हैं। आप मूल्यवान हैं क्योंकि यीशु ने आप के लिए अपना लहू बहाया।

आप में गलतियाँ हो सकती है। आपके विषय में ऐसी बातें हो सकती हैं जिन्हें बदलने की ज़रूरत हो, परंतु परमेश्वर आप पर ठीक उसी प्रकार कार्य कर रहा है जैसे किसी और के जीवन में। किसी और को अपनी समस्याएँ आप पर उण्डेलने न दें। किसी और को यह अनुमति न दें कि आपको अयोग्य और अनुपयोगी महसूस कराए केवल इसलिए कि वे नहीं जानता कि कैसे आपके साथ सही व्यवहार करना है और प्रेम करना है जैसा परमेश्वर के लहू से खरीदे जा चुके संतान के रूप में प्रेम किए जाने के आप हक्कदार हैं।

आपके साथ जो सही है उसे पहचानिए

> मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैः और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।
>
> गलातियों 2:20

परमेश्वर चाहता है कि हम हर समय सोचना बंद करें, "मुझ में क्या गलत हैं?" वह चाहता है कि हम इस बात पर ध्यान दें कि हमारे साथ क्या सही है।

निश्चय ही हमें अपनी गलतियों और कमज़ोरियों को पहचानना चाहिए। हमें उन क्षेत्रों को परमेश्वर के सामने हर समय खुला रखने की ज़रूरत है। हमें अंगीकार करने की आवश्यकता है, "पिता, मैं जानता हूँ कि मैं सिद्ध नहीं हूँ, मैं जानता हूँ कि मुझ में त्रुटियाँ और कमज़ोरियाँ हैं। मैं चाहता हूँ आप मुझ में कार्य करें और मुझ में परिवर्तन करें। मुझे अपनी त्रुटियाँ दिखाएँ और उस पर विजय पाने में मेरी सहायता करें प्रभु।"

परंतु हम दूसरों को अनुमति न दें कि वे हमारी समस्याओं और कमज़ोरियों के कारण हमको अपने पैरो तले कुचले।

अपने संपूर्ण जीवन को किसी और की स्वीकार्यता या समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करने में न बिताएँ। स्मरण कीजिए कि आप पहले से ही परमेश्वर के द्वारा स्वीकृत और प्रमाणित हैं। इस बात को निश्चित कीजिए कि आपकी प्रशंसा आपकी स्वयं की योग्यता का या स्व-मूल्य का भाव उस परमेश्वर से आता है।

9

अपनी त्रुटिओं को परिप्रेक्ष में रखिए

यदि आप कभी सचमुच में स्वयं में सफल होने जा रहे हैं तो आपको *अपनी त्रुटिओं को परिप्रेक्ष में रखना चाहिए।*

अपूर्णता पर ध्यान केन्द्रित मत कीजिए

...देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं...।

2 कुरिन्थियों 4:18

मेरी सचिव रॉक्सेन बहुत आकर्षक है। उसके बाल हल्के सुनहरे रंग के हैं और उसकी क्रीम रंग की त्वचा है। यदि वह कभी थोड़ा सा भी चकित हो जाए तो उसके गाल गुलाबी हो उठते हैं। वह उन कुछ लोगों में से है जो चालीस साल की होने पर भी बीस साल की दिखती हो। वह छोटी

है (उसका वज़न 93 पौण्ड है), फिर भी वह दुबली-पतली नहीं है। वह सचमुच में बहुत खूबसूरत है।

रॉक्सेन ने मुझ से कहा कि वह अपने शरीर के विषय में वर्षो तक निराश रही, विशेष करके वह सोचती थी कि उसकी जाँघे बहुत मोटी हैं। उसने कहा कि वह इनके विषय में बहुत अधिक चिन्तित थी कि वह कुछ प्रकार के वस्त्र नहीं पहिना करती थी। शायद ही कभी वह नहाने का वस्त्र पहिनती थी।

मैं कुछ समय उसके साथ कपड़े खरीदने गई। वह उन चीज़ों को पहनकर देखती थी ताकि वो अच्छी लगे, परंतु मैं कह सकती हूँ कि वह उससे प्रसन्न नहीं होती थी। अन्ततः उसने मुझ से कहा कि वह अपनी जाँघो के विषय में कैसे असुविधाजनक महसूस करती थी।

मैं विश्वास नहीं कर सकती थी! जब एक व्यक्ति का वज़न 93 पौण्ड हो तो उसके लिए *कुछ भी* बड़ा नहीं हो सकता था!

मैं इसे एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करती हूँ क्योंकि हम चाहे कितना भी आकर्षक दिखे, शैतान हमारे शरीर के कुछ हिस्से के विषय में ऐसा कर सकता है कि हम सोचे कि वह ठीक नहीं है। और वह ऐसा करने देगा कि हम उस भाग की तरफ़ अपना ध्यान अधिक दें चाहे केवल हम अकेले हों जो उस पर ध्यान देते हों।

एक बार मैंने अपने बालों को कटवाया और पीछे की तरफ़ यह इस प्रकार से नहीं कटा जैसा मैं चाहती थी। किसी और ने ध्यान नहीं दिया कि मेरे बाल भिन्न रीति से दिख रहें हैं। सच्चाई यह थी कि, जब मैंने डेव से इस बारे में बात की तो उन्होंने कहा, "यह बहुत ही अनोखी बात है

क्योंकि कुछ दिनों से मैं सोच रहा था कि तुम्हारे बाल पीछे से कितने अच्छे दिख रहें हैं।"

यह केवल असुविधा के प्रति अपनी आँखों को बन्द कर देने और हर बात को परिप्रेक्ष में देखने की बात है।

यदि अपने विषय में कभी हम असुरक्षा पर विजय पाने जा रहे हैं तो हमें अवश्य ही अपनी गलतियों को परिप्रेक्ष में देखना सीखने की ज़रूरत है। हम सब में त्रुटियाँ होती है परन्तु हमें चौबीस घंटे उस पर आईने में घूरने की ज़रूरत नहीं हैं।

यदि हम ने अपने निकटतम मित्रों से अपनी कुछ त्रुटियों के बारे में कहा, तो शायद वे उस पर हँसते होंगे। वास्तव में, जिन बातों को हम बड़ी गलती मानते हों शायद वे उनकी नज़र में अच्छी विशेषताएँ हों।

आप जैसा दिखते हैं, उसमें सन्तुष्ट हों

...क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है, "तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?"

रोमियों 9:20

शैतान ऐसी बेकार बातें हमारे मन में डालता है। शरीर सही में क्या है कौन इसका निर्णय करता है? कौन किसी मॉडल को सामने रखता है और कहता है, "अब हर कोई जो इस तरीके से नहीं दिखता है गलत है?"

परमेश्वर ने हम सबको बनाया है। इफिसियों 2:10 के अनुसार हम उसके हाथों की रचना हैं, उसके हस्तकला हैं। इसलिए जो उसने बनाया है वह उसे पसन्द आना चाहिए। परमेश्वर के लिए प्रसन्नता दायक होने के

लिए हम सबको किसी फैशन वालो या पहलवान के समान दिखने की ज़रूरत नहीं है।

हममें से प्रत्येक को एक ऐसे स्थान पर आना है जहाँ पर हम इस बात से सन्तुष्ट हों कि हम कैसे दिखते हैं। इसका यह तात्पर्य नहीं कि हमें व्यायाम करने या वज़न घटाने की ज़रूरत नहीं हैं। मैं दुबले रहने का प्रयास करने और स्वस्थ रहने का प्रयास करने के विषय में बात नहीं कर रही हूँ मैं उन सब मूर्खतापूर्ण बातों के विषय में बात कर रही हूँ जिनमें हम सब फँस जाते हैं ऐसी बातें जिनसे अक्सर हम अपने आपको बदल नहीं पाते हैं।

क्या आप अपने जीवन में असुरक्षा पर विजय पाना चाहते हैं? अपनी गलतियों को परिप्रेक्ष में देखना सीखें।

10

आत्मविश्वास के सच्चे श्रोत को ढूँढ़िए

अधिक सुरक्षित होने का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण कदम *आत्मविश्वास के सच्चे श्रोत को खोजना है।*

देह पर भरोसा मत रखिए

> क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते।
>
> फिलिप्पियों 3:3

आप किस बात में अपना भरोसा रखते हैं? इस प्रश्न का अवश्य ही इससे पहले उत्तर दिया जाना चाहिए कि आप परमेश्वर के भरोसे को प्राप्त कर सकें। इससे पहले कि आपका भरोसा उसमें हो, आपको अपने भरोसे को अन्य बातों से हटा लेना चाहिए।

अपने भरोसे को देह में मत रखिए–रूप, शिक्षा, धन, पद या संबंधों पर।

एक बार मेरी बेटी सैंडी और उसका बॉयफ्रेण्ड का रिश्ता टूट गया। मैंने उससे कहा, "यह शर्म की बात है, उसने निश्चय ही तुम्हे खो दिया है।"

यदि कोई आपके साथ संबंध नहीं रखना चाहता है, तो आप क्यों महसूस करते हैं कि आप दोषी है? हो सकता है दूसरे व्यक्ति की गलती हो।

यदि शैतान सोचता है कि वह आपको नकारात्मक विचारों से घिरा हुआ रख सकता है, तो वह जब तक यीशु नहीं आता है तब तक ऐसा करता रहेगा। जल्दि या बाद में आपको ऐसे स्थान पर आना है जहाँ पर आपका भरोसा देह में या बाहरी रूप में न हो परंतु यीशु मसीह में हो।

एक जवान महिला ने मुझ से कहा कि स्कूल में प्राप्त अंक को वह कितना महत्व देती थी। उसे डाईस्लेक्सिआ के समान सीखने में अयोग्यता की बीमारी थी और इसलिए वह बहुत पढ़ती थी ताकि उसके प्राप्तांक देखकर कोई न कह सके उसे एक समस्या है। परंतु वह इतना कठोर पढ़ाई करती थी कि वह उसके वास्तविक आनंद को ही चुरा रहा था।

मैंने उससे कहा, "आपको उन प्राप्त अंगो को वेदी पर रखने की ज़रूरत हैं।" मैंने देखा कि कैसे उस पर भय व्याप्त हो गया।

"मेरे प्राप्तंक मेरे लिए बहुत महत्व रखते हैं," उसने कहा, "थोड़ा नहीं परंतु बहुत।"

उसकी वास्तविक समस्या उसकी सीखने की अयोग्यता नहीं थी, यह उसमें उसके भरोसे की कमी थी। वह परमेश्वर के बजाए प्राप्त अंको पर भरोसा रख रही थी।

मैंने अपनी बेटी को कठोर प्रयास करते हुए देखा है कि उसके बाल ऐसे संवारे जाएँ कि अच्छे दिखे कि मैं इतना आश्चर्यचकित होती थी कि उसके बालों को संवारने के बाद भी बाल रह जाते थे। कभी कभी उसके बाल संवारने से पहले ही अच्छे दिखते थे इसके बजाए कि संवारने के बाद जिस पर उसने एक घण्टा खर्च कर दिया हो। परंतु उसके मन में वह संसार का सामना तब तक नहीं कर सकती जब तक उसका एक एक बाल सही स्थान पर न हो।

गलत स्थान पर भरोसे का यह एक और उदाहरण है।

गलत स्थान पर भरोसा

क्योंकि यहोवा तुझे सहारा दिया करेगा...

नीतिवचन 3:26

माता-पिता कभी-कभी अपना भरोसा अपने बच्चों के कार्यों को पूरा करने में रखते हैं जो कभी-कभी दोनों के लिए खतरनाक समस्या उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के लिए एक पिता चाहते थे कि उनकी बेटी डॉक्टर बने, इसलिए उसने अपना ध्यान उस लक्ष्य को पूरा करने पर लगाया। जो वह पिता नहीं जानते थे वह यह था कि परमेश्वर ने पहले से ही उनकी बेटी को मेरी सचिव होने के लिए चुन लिया था!

आप ने जहाँ जिस बात में भरोसा रखा है क्या परमेश्वर उसमें कार्य कर रहा है? क्या यह विवाह में है? एक कॉलेज की डिग्रि में है? आपके नौकरी में है? आपके जीवन साथी में है? आपके बच्चों में है?

मसीहियों के रूप में, हमें अपना भरोसा अपने रूप, अपनी शिक्षा, अपने पद, अपनी संपत्ति, अपने वरदान, अपनी योग्यताएँ, अपने गुणों, अपनी

विशेषताओं और अपनी उपलब्धियों या दूसरे लोगों के विचारों में नहीं रखना चाहिए। हमारा स्वर्गीय पिता हमसे कह रहा है, "और नहीं, यह समय है कि इन सारे दैहिक बातों को जाने दें जिनको आप इतने लम्बे समय से थामे रहे हैं। यह समय है कि तुम अपना भरोसा और विश्वास मुझ पर रखो, और केवल मुझ पर।"

परन्तु अधिकांशतः पुराने नियम के कुछ भविष्यद्वक्ताओं के समान, हम अपने आपको उन बातों से प्रभावित होने देते हैं जो दूसरे सोचते और कहते हैं और वे कैसे दिखते हैं।

आप वह हैं जो परमेश्वर कहता है कि आप हैं

तब यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा,

"गर्भ में रचने से पहले ही मैं ने तुझ पर चित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहले ही मैं ने तेरा अभिषेक किया, मैं ने तुझे जातियों का भविष्यद्वक्ता ठहराया।"

तब मैं ने कहा, "हाय, प्रभु यहोवा! देख, मैं तो बोलना भी नहीं जानता, क्योंकि मैं लड़का ही हूँ।"

परन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, "मत कह, कि मैं लड़का हूँ, क्योंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेजूँ वहाँ तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा दूँ वही तू कहेगा।" तू उनके मुख को देखकर मत डर, क्योंकि तुझे छुड़ाने के लिए मैं तेरे साथ हूँ, यहोवा की यही वाणी है।

यिर्मयाह 1:4-8

यिर्मयाह प्रचार करने से डरता था। उसने कहा, "मैं नहीं बोल सकता हूँ।" परमेश्वर ने कहा, "तुम वहाँ जाओ और मैं जो करने के लिए कहता

हूँ उसे करो। मैं जो सन्देश देता हूँ उसे लोगो से कहो, उनके चेहरों की ओर मत देखो। मैं उन सबके क्रोध से तुम्हें छुड़ाने के लिए तुम्हारे साथ हूँ क्योंकि तुम मेरे चुने हुए पात्र हो ।"

यदि परमेश्वर कहता है कि हम कुछ हैं, तो हम हैं, चाहे उसे कोई और स्वीकार करे या न करे ।

लोगों ने मुझ से कहा कि मैं प्रचार नहीं कर सकती। वास्तव में यह मज़ाक था क्योंकि उन्होंने मुझ से यह तब कहा जब मैं प्रचार कर रही थी!

कुछ लोगों ने कहा, "प्रचार नहीं कर सकती क्योंकि तुम एक महिला हो ।"

मैं ने कहा, "मैं नहीं कर सकती?"

"नहीं, तुम नहीं कर सकती ।"

"लेकिन मैं प्रचार कर रही हूँ," मैंने कहा, "मैं पहले से कर रही हूँ!"

निश्चय ही उन सभी आलोचनाओं के कारण जो मैंने प्राप्त किया हार मानने की परीक्षा थी। परन्तु मैं ने कभी भी उन परीक्षाओं के प्रति हार नहीं मानी क्योंकि मैं जानती थी कि मैं वह कर रही हूँ जो परमेश्वर ने मुझ से करने के लिए कहा है। पौलुस के समान, मैंने अपना भरोसा प्रभु में पाया, धर्म में नहीं ।

धर्म परमेश्वर के साथ हस्तक्षेप कर सकता है

पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख सकता हूँ, यदि किसी और को शरीर पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं उससे भी बढ़कर रख सकता हूँ।

आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएल के वंश; और बिन्यामिन के गोत्र का हूँ, इब्रानियों का इब्रानी हूँ, व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो फरीसी हूँ।

उत्साह के विषय में यदि कहो तो कलीसिया का सतानेवाला; और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था।

फिलिप्पियों 3:4-6

पौलुस न केवल एक फरीसी ही था, शायद अपने समय के यहूदियों में सब से धर्मी भी था, वह फरीसियों का सरदार था। वह इतना धर्मी था कि अपने पंथ के सभी धार्मिक नियमों का पालन किया करता था। परंतु उसने पाया कि उसकी कोई भी धार्मिक मान्यताएँ महत्व की नहीं थी, इसलिए वह मसीह को पाने के लिए सब कुछ त्यागने के लिए तैयार था।

मसीह के लिए नियमों को त्याग दें

परन्तु जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है।

वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ, जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ।

फिलिप्पियों 3:7,8

स्वयं का मूल्य पाने के लिए आप किन नियमों का पालन करने का प्रयास कर रहे हैं? हो सकता है आपके नियम कुछ निश्चित समय तक प्रार्थना करना या प्रतिदिन बाइबल के कुछ अध्यायों को पढ़ना हो।

धार्मिक नियम हम से कहते हैं, "यह करो, वह करो, यह मत खाओ, उसे मत छुओ," (कुलुस्सियों 2:20-21) । परन्तु परमेश्वर चाहता है कि पौलुस ने जो किया वह हम करें--इन सारे नियमों और कायदों से छुटकारा पाएँ ताकि हम मसीह को प्राप्त करें और उसमें जाने और पाए जाएँ।

मसीह में पाएँ और जाने जाएँ

> और उसमें पाया जाऊँ; न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है।
>
> फिलिप्पियों 3:9

इस पद का अपने ऊपर एक अभिषेक है जिसे खोना नहीं चाहिए। इसमें पौलुस कहता है कि वह एक चीज़ जीवन में प्राप्त करना चाहता है–मसीह में पहचाना और पाया जाना।

हमारा यही स्वभाव होना चाहिए। हम हमेशा सिद्ध *व्यवहार* नहीं कर सकते परन्तु परमेश्वर की सहायता से हम हमेशा एक सिद्ध *उद्धारकर्त्ता* को प्रतिबिम्बित कर सकते हैं।

क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर क्यों हमें कभी भी सिद्ध व्यवहार प्राप्त करने नहीं देगा? यदि हम कभी ऐसा करें हम परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के बजाए अपनी सिद्धता और कार्य से अपने मूल्य निर्धारण करेंगे।

यदि मैं और आप हर समय सिद्ध व्यवहार करते हैं, हम सोचेंगे कि परमेश्वर को हमारी प्रार्थना का उत्तर देना ही होगा क्योंकि प्रत्येक नियमों और कायदों के प्रति हमारी आज्ञाकारिता के कारण। इसलिए क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर क्या करता है? वह हममें कुछ कमज़ोरियाँ छोड़ देता

है कि हम लगातार उसके पास सहायता माँगने के लिए जाएँ-इसलिए कि हम उस पर निर्भर रहें चाहे हम इसे पसन्द करें या न करें।

परमेश्वर ठीक शान्ति और पूर्णता के भाव में हमें कार्य करने नहीं देने जा रहा है। परन्तु वह एक उपयुक्त स्थिति में हमें काम करने देगा, क्यों? ताकि हम जानें कि देह के काम कुछ भी फल नहीं लाते हैं परन्तु दुःख और निराशा ही (रोमियों 3:20)।

यदि ऐसा है, तो हमें क्या करना चाहिए? आराम से रहकर जीवन का आनन्द उठाना चाहिए। परमेश्वर के अधिक आनंद को उठाने के लिए सीखने की ज़रूरत है। यह न केवल हमारी सहायता करेगा परन्तु हमारे चारों ओर के लोगों के दबाव से हमें मुक्त करेगा। हमें यह माँग करना छोड़ देना होगा कि हर व्यक्ति हर समय सिद्ध बनें रहे। वे केवल कैसे हैं उनका हमें आनन्द उठाना प्रारंभ करने की ज़रूरत है।

सारांश में पौलुस ने कहा, कि वह परमेश्वर के सामने खड़े होने के योग्य होना और यह कहना चाहता है, "हाँ, मैं यहाँ हूँ, प्रभु, जैसा मैं हमेशा से था, वैसा ही। मेरे पास कोई अच्छा काम तुम्हें देने के लिए नहीं है। मेरे पास एक अच्छा विवरण नहीं है, परन्तु मैं यीशु में विश्वास करता हूँ।"

मुझे और आप को, इस प्रकार प्रतिदिन जीना है या हम कभी भी शान्ति और सन्तुष्टि का आनन्द नहीं उठा पाएँगे। हम जीवन का आनन्द नहीं उठा पाएँगे यदि सब कुछ हमारे भले कामों पर आधारित हो। हमें परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को पहिचानना सीखना चाहिए।

परमेश्वर पर निर्भर होने के तीन कदम

यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर; देश में बसा रह, और सच्चाई में मन लगाए रह।

भजन संहिता 37:3

परमेश्वर पर एक स्थिति के लिए निर्भर होने के तीन कदम हैं।

पहला, सीखिए कि आप क्या नहीं हैं। इस सत्य को स्वीकार कीजिए कि आप अपने कामों पर आधारित होकर अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने नहीं जा रहे हैं । इसके बजाए आप उसे पसन्द करें या न करें आपको परमेश्वर पर भरोसा रखना है। "अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़, और उस पर भरोसा रख वही पूरा करेगा" (भजन संहिता 37:5)।

परमेश्वर पर निर्भर बने रहने का दूसरा कदम यह सीखना है कि परमेश्वर कौन है। "यह सब तुझको दिखाया गया, इसलिए कि तू जान रखे कि यहोवा ही परमेश्वर है, उसको छोड़ और कोई है ही नहीं"(व्यवस्थाविवरण 4:35)।

तीसरा कदम यह सीखना है कि जैसा परमेश्वर है वैसे आप भी हैं: "...कि हमें हियाव हो..., क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं" (1 यूहन्ना 4:17)।

केवल रोटी से ही नहीं

और स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में से इसलिये ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं ।

उसने तुझ को नम्र बनाया, और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखा ही जानते थे, वही तुझ को खिलाया । इसलिये कि वह तुझ को सिखाए कि मुनष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो वचन यहोवा के मुँह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है।

व्यवस्थाविवरण 8:2,3

मैं एक बार अपनी सेवकाई के संबन्ध में ऐसी परिस्थिति से होकर गुज़री जो मुझे निराश करने और भ्रम में डालने वाली थी। कुछ दिन सेवकाई के लिए बहुत सारी चिट्ठियाँ और धन आए । अगले दिन मैं डाक घर जाती और एकाध चिट्ठियाँ ही पाती। एक सप्ताह बड़ी भीड़ के साथ मेरी सभा होती तब अगले ही सप्ताह श्रोताओं की संख्या आधी रह जाती। शैतान मुझ से कहता, "पिछले सप्ताह तुम ने जो प्रचार किया उसे लोगों ने पसन्द नहीं किया इसलिए वे वापस नहीं आए।"

जब परिस्थितियों ने मुझ से कहा मैं सही कर रही हूँ, मेरी भावनाएँ उछल पड़ती। जब परिस्थितियाँ मुझ से कहती मैं ठीक नहीं कर रही हूँ तो मेरी भावनाएँ मुरझा जाती । शैतान मुझे दौड़ा रहा था । हर अच्छा अनुभव मुझे उत्साहित करता और हर बुरा अनुभव मुझे औंधे मुँह गिरा देता (मैं इसे "यो-यो" मसीहियत कहती हूँ) ।

यह स्थिति वर्षो तक रही। डेव मुझे बताने का प्रयास करते कि मैं शैतान के आक्रमण के अधीन थी, परन्तु मैं इसे देख नहीं सकती थी। मैंने परिस्थिति को दिमाग से देखा, परंतु मैंने इसे अपने हृदय में नहीं समझा।

एक दिन जब मैं अपने गृह नगर में गाड़ी चला रही थी, मैंने परमेश्वर से कहा, "यह क्यों हो रहा है?" प्रभु के आत्मा ने मुझ से कहा, "मैं तुम्हें सिखा रहा हूँ कि मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जी सकता है, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।"

रोटी इस्राएल के सन्तानों की दैनिक ज़रूरत थी। रोटी उन्हें निरन्तर चलायमान बनाए रखती थी। जब परमेश्वर ने मुझ से रोटी के विषय में कहा तो वह कह रहा था, "मैं तुम्हें सिखाने का प्रयास कर रहा हूँ कि तुम इन सब बातों के द्वारा नहीं जी सकती हो तुम्हें चलायमान बनाए रखता है । तुम्हें अपनी दैनिक ज़रूरतों के लिए मेरी ओर देखना चाहिए।"

मिश्रियों की गुलामी से उन्हें छुड़ाने के पश्चात परमेश्वर इस्राएलियों को चालीस वर्ष सीख देते हुए जंगल में ले चला। वे धीमे सीखने वाले लोग थे। व्यवस्थाविवरण 1:2 कहता है, "होरेब से कादेशबर्ने तक सेईर पहाड़ का मार्ग (केवल) ग्यारह दिन का है (कनान की सीमा तक, फिर भी इस्राएली उसे पार करने में चालीस वर्ष लगा दिए)।"

परमेश्वर छुड़ाने वाले और संभालने वाले के रूप में

तब वह इस्त्राएल को सोना चाँदी दिलाकर निकाल लाया, और उनमें से कोई निर्बल न था।

भजन संहिता 105:37

जब इस्राएली मिस्त्र से बाहर आए वे आशीषित लोग थे। उन्होंने परमेश्वर से आश्चर्यकाम को और उन सब घटनाओं को देखा था जो उसने फिरौन के साथ उनके द्वारा किया था। क्योंकि परमेश्वर उनके साथ था, वे गुलामी के देश से मिश्रिओं के आधिकत्तम धन संपत्ति के साथ, और शरीरिक स्वास्थ्य और शक्ति के साथ बाहर आए।

परन्तु परमेश्वर चाहता था कि वे जाने कि उसने ही उन्हें बाहर लाया है और वे स्वयं नहीं आए हैं। वह चाहता था कि वे सीखें कि यदि उन्हें कष्टों से बचे रहना है तो लगातार उन्हें उस पर आश्रित रहना है।

मैं सोचा करती थी कि मेरी सभाओं में भीड़ की संख्या मेरे अच्छे प्रचार में निर्भर होती थी। मैं अब भी नहीं समझती थी कि यह जॉयस मेयर नहीं है जो उन्हें सभाओं में लाती है। मुझे सीखना था कि यदि वे आते हैं तो परमेश्वर को उन्हें लाना है। मुझे सीखना था, कि मैं परमेश्वर पर पूर्ण निर्भरता रखूँ। यह सीखने में मुझे लगभग चालीस वर्ष लगे। आशा है इस पुस्तक को पढ़ना आपका कुछ समय बचाएगा।

परमेश्वर में आनन्द और शांन्ति की कुन्जी

और कहीं ऐसा न हो कि तू (अपने मन में) सोचने लगे कि यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ्य और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई।
व्यवस्थाविवरण 8:17

अब मैं समझती हूँ कि मेरा आनंद परमेश्वर में होना है, मेरी सेवकाई में नहीं। मेरी शांति प्रभु में होना है, न कि मेरे कार्यों में।

हमारे जीवन में जो कुछ आता है वह सब कुछ परमेश्वर की ओर से नहीं होता है। परंतु परमेश्वर जीवन के अच्छी और बुरी दोनों बातों को हमें सिखाने के लिए इस्तेमाल करेगा कि हम उस पर निर्भर रहें।

अब मुझ में यह विचार नहीं है कि बड़ी भीड़ मेरे प्रयासों का परिणाम है। अब जब मैं प्रचार समाप्त करती हूँ, मैं कहती हूँ, "हाँ, प्रभु, अगली बार जो होगा वो आपकी ओर से होगा। आप ने यहाँ पर इन लोगों को लाया, यदि आप चाहते हैं कि वे वापस जाएँ तो आपको ही उन्हें वापस ले जाना है। मैं उठने और अपने भरसक श्रेष्ठ रीति से प्रचार करने जा रही हूँ और शेष आप पर छोड़ रही हूँ।"

यदि आप सच में शांति और सुरक्षा में जीना चाहते हैं, यह वह स्वभाव है जो आप में होना चाहिए। आप को अपना श्रेष्ठ करना चाहिए और परिणाम को परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए।

प्रभु आपके भीतर से सभी सांसारिक बातें झटकने दें जिसके द्वारा आप भरोसा, मूल्य, सुरक्षा, और भलाई का भाव जगाने का कठिन प्रयास करते है। आप उसे उन्हें ले लेने भी दे सकते हैं, क्योंकि वह तब तक हार नहीं मानेगा जब तक वह अपना मार्ग नहीं निकाल लेता है-और उसके मार्ग सदा उत्तम हैं।

सारांश

स्वयं को सच में पसंद करने हेतु मसीह में हम कौन हैं इस बात में सुरक्षित होने के लिए आत्मसम्मान, आत्म-मूल्य और स्वयं की कीमत का एक सकारात्मक भाव होना बहुत ही महत्वपूर्ण है। परमेश्वर हमसे कितना प्यार करता है यह सीखने के द्वारा हम स्वयं को पसंद करना सीखते हैं। एक बार जब हम परमेश्वर के प्रेम में जड़ पकड़ लेते और स्थिर हो जाते हैं, तब हम स्वयं के साथ शांति स्थापित कर लेते हैं।

आत्मविश्वास का निर्माण के दस कदम

आत्मविश्वास का निर्माण करने के दस कदम निम्नलिखित हैं। मैं आप से विनती करती हूँ कि इसकी प्रतिलिपि बना लें और किसी ऐसे स्थान पर टाँग दें जहाँ से वह प्रतिदिन आपको दिख जाए।

1. नकारात्मकता को विलोपित करें
2. सकारात्मक का उत्सव मनाओ

3. तुलना करने से बचें
4. संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करें, सीमाओं पर नहीं
5. अपने वरदान का उपयोग कीजिए
6. भिन्न होने का साहस रखिए
7. आलोचना से निपटने के लिए सीखना
8. अपने मूल्य का निर्धारण कीजिए
9. अपनी त्रुटिओं को परिप्रेक्ष में रखिए
10. आत्मविश्वास के सच्चे श्रोत को ढूँढ़िए

भाग दो

वचन

आत्मविश्वास के विषय में वचन

प्रेम में भय नहीं होता, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है; क्योंकि भय का सम्बन्ध दण्ड से होता है, और जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।

1 यहून्ना 4:18

शैतान विभिन्न रीति से लोगों को यातना देने में प्रसन्न होता है। असुरक्षा, आत्मनिंदा, आत्मदण्ड, और एक बुरा आत्म स्वरूप उसके कुछ रास्ते हैं। असुरक्षा कुछ नहीं परंतु भय की आत्मा का निम्न स्वरूप हैं।

ये वचन तुम्हें परमेश्वर का प्रेम दे और तुम्हारी सारी असुरक्षा क्षीण हो जाए।

क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा की पवित्र प्रजा है; यहोवा ने पृथ्वी भर के सब देशों के लोगों में से तुझ को चुन लिया है कि तू उसकी प्रजा और निज धन ठहरे।

यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे, किंतु तुम तो सब देशों के लोगों से गिनती में थोड़े थे।

व्यवस्थाविवरण 7:6,7

तुझे आशा होगी, इस कारण तू निर्भय रहेगा; और अपने चारों ओर देख देखकर तू निर्भय विश्राम कर सकेगा।

जब तू लेटेगा, तब कोई तुझे डराएगा नहीं; और बहुतेरे तुझे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे।

अय्यूब 11:18,19

तू मेरे मारे मारे फिरने का हिसाब रखता है; तू मेरे आँसूओं को अपनी कुप्पी में रख ले! क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं हैं?

भजन संहिता 56:8

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।”

यूहन्ना 3:16

...कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर,

सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है।

और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे हैं कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।

इफिसियों 3:17-19

...परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

2 तीमुथियुस 1:7

...मैं उस पर भरोसा रखूँगा...

इब्रानियों 2:13

जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उसको हम जान गए और हमें उसका विश्वास हैं। परमेश्वर प्रेम हैं, और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उसमें बना रहता है।

1 यूहन्ना 4:16

हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हम से प्रेम किया।

1 यूहन्ना 4:19

आत्मविश्वास के लिए प्रार्थना

महिमामय पिता,

मैं आपके स्वरूप में सृजा गया हूँ, इसलिए मैं असुरक्षित नहीं हूँ। मेरी सुरक्षा आप में हैं। आप मेरी धार्मिकता और मेरी शांति हैं।

मैं मनुष्य के भय से और भावना से अलग हो गया हूँ कि मैं तुलना नहीं करती। मेरी सहायता कीजिए कि मैं अपनी तुलना दूसरों के साथ करना बंद करूँ। मेरी सहायता कीजिए कि अपने आपको उस प्रकार देखूँ जैसा आप मुझे देखते हैं–पूर्ण, सुरक्षित और संपूर्ण। मेरी सहायता कीजिए कि स्मरण करूँ कि यीशु मसीह के द्वारा मैं अपनी सभी असुरक्षाओं पर विजय पाने और अपने जीवन भर आत्मविश्वास के साथ चलने के योग्य हूँ!

यीशु के नाम में, आमीन!

प्रभु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के लिए प्रार्थना

यदि आपने कभी भी यीशु, शांति के राजकुमार को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता होने के लिए निमंत्रित नहीं किया है, तो मैं आपको अभी ऐसा करने के लिए निमंत्रित करती हूँ। निम्नलिखित प्रार्थना कीजिए, और यदि आप इसके विषय में सच में गंभीर है, तो आप मसीह में एक नया जीवन का अनुभव करेंगे।

पिता,

आपने संसार से बहुत अधिक प्रेम किया कि, आपने अपना एकलौता पुत्र दें दिया कि हमारे पापों के लिए मरे, कि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश न हो परंतु अनंत जीवन पाए।

आपका वचन कहता है, कि हम अनुग्रह के द्वारा विश्वास से बचाए गए हैं जो आपकी ओर से एक वरदान है। उद्धार को कमाने के लिए हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं।

मैं विश्वास करता और अपने मुँह से अंगीकार करता हूँ कि यीशु मसीह संसार का उद्धारकर्ता और आपका पुत्र है। मैं विश्वास करता हूँ कि वह मेरे लिए क्रूस पर मरा और मेरे पापों की कीमत चुकाते हुए उन्हें उठा लिया। मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ कि आपने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।

मैं आप से मेरे पापों को क्षमा करने की प्रार्थना करता हूँ। मैं यीशु को अपने प्रभु के रूप में अंगीकार करता हूँ। आपके वचन के अनुसार मैं बचाया गया हूँ और अनंत काल तक आपके साथ रहूँगा! धन्यवाद पिता! मैं बहुत ही आभारी हूँ!! यीशु के नाम में, आमीन।

देखिए यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8,9; रोमियों 10:9,10; 1 कुरिन्थियों 15:3,4; 1 यूहन्ना 1:9; 4:14-16; 5:1,12,13

लेखिका के विषय में

जॉयस मेयर विश्व के प्रमुख व्यवहारिक बाइबल शिक्षकों में से एक है। न्यू यॉर्क टाइम्स की नम्बर 1 सर्वोत्तम विक्रय की गौरव प्राप्त लेखिका, जिन्होंने नब्बे से अधिक प्रेरणादायक पुस्तकें लिखी हैं जिनमें *लिविन्ग बियन्ड युवर फिलिंग्स, पावर थॉट्स,* बैट्टलफील्ड श्रृंखला की संपूर्ण पुस्तकें, और दो उपन्यास, *दि पेन्नी* और *एनि मिनट*, जैसी और भी अन्य पुस्तकें शामिल हैं। उन्होंने शिक्षा देने के लिए हज़ारों ऑडियो सी.डी. के साथ वीडियो सी.डी. की पूरी लाइब्रेरी का विमोचन किया है। संसार भर में जॉयस का प्रतिदिन के *जीवन का आनन्द लीजिए* नामक रेडियो और टेलीविज़न कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं, और वे सम्मेलनों के संचालन हेतु विस्तृत देशाटन करती हैं। जॉयस एवं उनके पति डेव चार वयस्क बच्चों के माता-पिता हैं और सेन्ट लुईस, मिसौरी में उनका निवासस्थान है।

To contact the author in the United States, please write:
Joyce Meyer Ministries
P.O. Box 655,
Fenton, Missouri 63026
or call: (636) 349-0303
or log on to: www.joycemeyer.org

To contact the author in India, please write:
Joyce Meyer Ministries
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
or call: 2300 6777
or log on to: www.jmmindia.org